जीवन का स्वर्गीय नमूना

ऐड्रिन ईबेन्स

जीवन का स्वर्गीय नमूना

आपके जीवन, विचारों और सम्बन्धों में सम्पन्नता लाने का एक प्रयास

ऐड्रिन ईबेन्स्

www.adrianebens.com
adrian@life-matters.org

विषय सूची

1. तलाश 3
2. गिरा हुआ सेब 5
3. सूर्य ओढ़कर चन्द्रमा के ऊपर खड़ा होना 8
4. आत्मिक नक्शा और दिशा बताने वाला यंत्र 12
5. स्वर्गीय नमूना 17
6. जीवन की धारा/स्रोत 24
7. इस ''संसार का ईश्वर'' और विरोधी शक्तियाँ 28
8. जीवन के लिये विश्राम (सब्बत): मानसिक विश्राम की प्राप्ति 33
9. स्वर्गीय नमूना प्राप्त करने का संकरा मार्ग 37
10. अगला क़दम 42

साहित्य, प्रार्थना और व्यक्तिगत मुलाकात हेतु संपर्क करें:
विक्टोरियस लाइफ मिनीस्ट्री इन्टरनेशनल
पोस्ट ऑफिस बॉक्स-75 (HPO)
बरेली-243 001, उत्तर प्रदेश [भारत]
ईमेल : globalendtime@gmail.com
मोबाइल नम्बर : 0930-920-6425

1. तलाश

सत्रहवीं सदी के अन्तिम दशक में आईजक न्यूटन स्वर्गीय पिण्डों के क्षेत्र पर मनन कर रहा था. आकाश में घूमते हुए आकाशीय पिन्डों के बीच में कौन सी वस्तु है जो उन्हें एक दूसरे से जोड़कर रखती है? इन सम्बन्धों को समझने के लिए क्या कोई सर्वव्यापी नियम है या फिर इनके बीच में कोई जटिल और रहस्यमयी तंत्र है जिसे समझना हमारी समझ से परे है? न्यूटन के दिल में इसे समझने की चाहत किस वज़ह से पैदा हुई? क्या वास्तव में उसके सिर में एक सेब आकर लगा था जिससे वह गुरुत्व बल के प्रभाव के बारे में सोचने के लिए विवश हुआ? अभी हाल ही में लन्दन की रॉयल सोसाइटी के अभिलेखागार के एक हस्तलेख ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है, बाद में यही हस्तलेख सर न्यूटन की जीवनी बननेवाला था.

> रात्रि के भोजन के बाद, मौसम गर्म होने के कारण हम लोग बाग़ में टहलने चले गये और वहाँ हमने चाय भी पी, सेब के कुछ पेड़ों के नीचे...जैसा कि उसने मुझे बताया, वह हमेशा की तरह उसी मुद्रा में था, गुरुत्वाकार्षण का विचार उसके मन में आया. जब वह सोच में डूबा हुआ था, एक सेब के गिरने के कारण वह यह बात सोचने के लिए प्रेरित हुआ. उसने अपने मन में सोचा कि वह सेब हमेशा नीचे की ओर (पृथ्वी पर) ही क्यों गिरता है...[1]

सेब के गिरने की घटना ने दूसरी अनेक अन्य घटनाओं की एक श्रृंखला की शुरूआत कर दी जिन्होंने उस प्रिन्सिपिया (सिद्धान्त) की नींव रख दी जिसके ऊपर न्यूटन ने पारंपरिक यांत्रिकी के लिये तीन सर्वव्यापी (Universal) नियमों का निर्माण किया. ये नियम वस्तुओं के बीच सम्बन्ध का वर्णन, उन पर कार्य करने वाले बल और होनेवाले परिणाम के बारे में बताते हैं. न्यूटन ने इसे समझाने के लिए इसका नाम ग्रेविटी–गुरुत्व बल का नाम दिया जिसे लैटिन शब्द ग्रेविटास (Gravitas-Weight) लिया गया है

[1] http://www.newscientist.com/blogs/culturelab/2010/01/newtons-apple-the-real-story.html

और गुरुत्वाकर्षण के सर्वव्यापी नियम की परिभाषा तैयार कर दी. [2]

न्यूटन का सिद्धान्त (*Principia*) आनेवाले 300 वर्ष के लिए भौतिक विश्व की वैज्ञानिक सोच पर शासन करनेवाला था. वह इन सिद्धान्तों को उपग्रहों के प्रेक्षण पथ निर्धारित करने और ज्वार-भाटा आने की सूचना देने के लिए प्रयोग करनेवाला था... इस खोज ने इस विचार का प्रभाव पूरी तरह से समाप्त कर दिया कि हमारी पृथ्वी सौर मण्डल के केन्द्र में स्थित है.[3] सौर मण्डल में पाये जाने वाले आकाशीय पिण्डों के बीच सम्बन्धों के अध्ययन ने विश्व के प्रति हमारे सोच को बदला है और मानव को इस संसार की शक्तियों को गुरुत्वाकार्षण के नियमों के अनुसार अपने हित में प्रयोग करने का सुअवसर दिया है.

आसमानी पिण्डों के बारे में यूटन की तलाश इस पृथ्वी की एक घटना से शुरू हुई. पेड़ से गिरते हुए सेब को देखने से यह प्रश्न खड़ा हुआ कि सेब और पृथ्वी के बीच में क्या सम्बन्ध है और वह कौन सी शक्ति है जो दोनों को एक दूसरे की ओर खींचती है.

21वीं सदी के किनारे पर खड़े होकर मेरे मन में एक तलाश करने की चाहत पैदा हुई है और वह है आकाशीय पिण्डों के बीच में पाये जाने वाले सम्बन्ध को समझूँ. यदि भौतिक पिण्डों के बीच में पाये जाने वाले सम्बन्ध की सही समझ मानव के वैज्ञानिक प्रयासों में इतनी बड़ी प्रगति लाने का कारण बन सकती है तो आकाश और संसार के आत्मिक पिण्डों की सही समझ प्राप्त होने से क्या कुछ नहीं हो सकता है? पृथ्वी के आत्मिक पिण्डों से मेरा तात्पर्य आदमियों, औरतों और बालकों के दिमाग़ों के बीच सम्बन्ध, आदमियों और स्वर्गीय क्षेत्र के बीच में पाये जाने वाले सम्बन्ध से है. हम यहाँ पर इस बात का ज़िक्र कर सकते हैं कि न्यूटन के प्रयासों का प्रारम्भ पृथ्वी के क्षेत्र में हुआ था किन्तु उसका उत्तर आकाशीय क्षेत्रों में मिलता है.

आइये हम उस सर्वव्यापी नियम की खोज (Quest) शुरू करें जो आत्मिक संसार पर शासन करती है.

[2] https://en.wikipedia.org/wiki/Isaac_Newton#Mechanics_and_gravitation
[3] Ibid

2. गिरा हुआ सेब

एक मसीही संस्था में कार्य करते समय मैं जिस स्थान पर कार्यरत था वहाँ से मैं सैक्स सम्बन्धी समस्याओं के असर को देख सकता था. ये लोग जिस प्रकार की परेशानियों से गुज़र रहे थे, इसके द्वारा मैं समझ सकता था कि संसार में कितनी अधिक पीड़ाएँ पायी जाती हैं. एकान्त में मैं प्राय: यह सोचा करता था कि एक मसीही दूसरे मसीही के साथ ऐसा विश्वासघात कैसा कर सकता है, क्योंकि इनमें से कुछ पीड़ित लोगों का शोषण कलीसिया के भरोसेमन्द अगुवों ने ही किया था. यह विचार मेरे दिमाग़ में बहुत समय तक चलता रहा. एक विश्वासी और सम्मानित अगुवा किसी को दु:ख पहुँचाने की हद तक इन बातों को बार-बार दोहराये जाने की अनुमति कैसे दे सकता है? इससे भी अधिक होने वाला था.

फोन पर आ रही आवाज़ में बेचैनी थी. मैं जानता था कि मुझे वहाँ पहुँचकर मदद करना पड़ेगी. जिस कलीसिया की मैं सेवा कर रहा था उसके दो सदस्य क्रोध भरी बहस में उलझे हुए थे. जब मैं वहाँ पहुँचा, शोर स्पष्ट सुनाई देने लगा. सबसे पहले मैंने मन ही मन स्वर्गीय बुद्धि और अनुग्रह पाने के लिये प्रार्थना की. जब माता-पिता एक दूसरे के प्रति ज़हर उगल रहे थे, बच्चों की आँखों में डर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था. गिरजाघर में आप इस प्रकार के संघर्ष की कल्पना नहीं कर सकते हैं. उस रात वह झगड़ा तो शान्त हो गया लेकिन मेरे मन में एक आग सुलगने लगी. मैंने उन आँकड़ों को निकालकर देखना शुरू किया जिनका मैंने तलाक और सैक्सुअल प्रताड़ना विषय पर अपने प्रशिक्षण के दौरान अध्ययन किया था. उन आँकड़ों को अब कई चेहरों और नामों से जोड़कर देखा जा सकता था. स्थिति की गम्भीरता को कठोर तथ्यों के द्वारा रोकने का प्रयास किया जा रहा है. तभी मुझे वह समय याद आया जब मेरे मन में उस

विचार के साथ सेब गिरा था:

कोई चीज़ ग़ायब है. हमारे पास उत्तर नहीं हैं, मैंने सोचा. यहाँ–वहाँ मैं किसी एक या दो घटनाओं को देख सकता था लेकिन मेरे सामने सही आँकड़े नहीं थे: वर्तमान समय में 10 में से 1 बालक सैक्स सम्बन्धी अत्याचार का शिकार हो रहा है.[4] जिस संस्था में मैं काम कर रहा था उसमें तलाक की दर 28% तक ऊँची और कुछ क्षेत्रों में वैवाहिक सम्बन्धों में टकराव की दर 58% तक पहुँच चुकी थी.[5]

मैं इन तथ्यों को नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकता था. परिवारिक और सामाजिक रिश्तों में पाये जाने वाले इस बिखराव का मुझे कोई समाधान खोजना था. यह समस्या इसलिये और भी जटिल हो गई थी क्योंकि इस संसार और कलीसिया के भीतर अधिकाँश लोग अपने परिवारों को बहुत अधिक महत्व देते हैं. नीचे दिये वक्तव्यों पर ध्यान दें:

> इस संसार में परिवार सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्था है.– *प्रिंसिस डायना*
>
> एक राष्ट्र की शक्ति उसमें बसने वाले परिवारों की एकजुटता पर निर्भर है.– *कंफ्यूसियस*
>
> मेरे जीवन में सबसे अधिक खुशियों भरे पल वे रहे हैं जो मैंने अपने घर में अपने परिवार की गोद में बिताये हैं.– *थॉमस जैफर्सन*
>
> अपने मानवीय सम्बन्धों को–अपने परिवार और मित्रों के साथ अपने रिश्तों को संभाल कर रखिये.– *बारबारा बुश*

इस प्रकार के विचार मैं बार बार सुनता रहता हूँ, लेकिन फिर भी परिवारों और समाज के बीच में इतना अधिक संघर्ष, टकराव और शोषण पाया जाता है जो यह प्रश्न खड़ा करता है: वे ठोस सिद्धान्त कौन से हैं जो स्वस्थ और मज़बूत रिश्तों को बढ़ावा देंगे? क्या हृदय के विचारों से सम्बन्धित कोई ऐसा सर्वव्यापी नियम है जिसे सही तरह से समझकर प्रयोग करने से हमारे रिश्ते मज़बूत होंगे और हमारे बीच में पाया जानेवाला संघर्ष और टकराव कम हो जाएगा?

न्यूटन के समान मेरा मन स्वर्गीय पिण्डों के रिश्तों पर टिक गया और मैं स्वर्ग से कोई नमूना या ब्लूप्रिंट प्राप्त करने की आशा करने लगा जो मेरे दिमाग़ में बसे हुए प्रश्न का उत्तर दे सके. यह खोज मुझे मेरी

---

[4] Darkness to Light. End Sexual Abuse. www.d2l.org – figure released Aug 2013.
[5] http://family.adventist.org/home---divorce-and-remarriage-in-the-seventh-day-adventist-church.html

अपेक्षाओं से भी आगे लेकर गई और यही कारण है कि इस किताब का शीर्षक, *जीवन का स्वर्गीय नमूना* रखा गया है. सफल सम्बन्धों के रहस्य के उत्तर खोजते समय मेरा सामना ऐसी वास्तविकताओं से हुआ है जो मानवीय अनुभव के अनेक क्षेत्रों में बुद्धि की बातें करती हैं. जब मैंने यह देखा कि यह सिद्धान्त कहाँ तक जाता है, इसके अर्थ को समझकर मैं अत्यंत आश्चर्य चकित और उत्तेजित हूँ. मैंने इन सिद्धान्तों पर आधारित अनेक अद्‌भुत् प्रयोग किये हैं.

परिचय के रूप में आइये हम उस प्रक्रिया को देखें जिसके द्वारा हमें जीवन प्राप्त होता है. पिता अपना बीज माता को देता है माता उसका पोषण करती है और यह उसके गर्भ में बढ़ता है जिससे वह बाद में बालक पैदा करती है. पिता का **सक्रिय उत्पत्ति स्रोत** का सिद्धान्त और हमारी माता का **प्रतिरोधविहीन** (Passive)**पोषण करने के माध्यम** का सिद्धान्त जीवन के नमूने के विषय में बुद्धि की बातें करता है क्योंकि यही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम इस पृथ्वी पर जीवन प्राप्त करते हैं. स्रोत और माध्यम के बीच में सही सम्बन्ध होने से जीवन मिलता है. इस सिद्धान्त का विस्तार और हमारे जीवन के प्रत्येक पहलु में इसके अर्थ/असर को देखना ही इस पुस्तिका का मुख्य उद्देश्य है. अपनी यात्रा के दौरान हम उस सिद्धान्त को भी देखेंगे जो जीवन के स्वर्गीय सिद्धान्त के विरोध में है और जिसने इस नमूने को बिगाड़ कर संसार में दु:ख, भ्रम और मृत्यु को भर दिया है.

आइये हम उन स्वर्गीय पिण्डों पर ध्यान दें जिनके ऊपर न्यूटन भौतिक पक्ष को ध्यान में रखकर विचार कर रहा था. जब हम प्रकाश, गुरुत्व बल और ज्वार-भाटा की नब्ज़ को समझने का प्रयास कर रहे है आइये हम सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी के बीच पाये जाने वाले सम्बन्ध पर ध्यान दें.

३. सूर्य ओढ़कर चन्द्रमा के ऊपर खड़ा होना

जब ज्वार-भाटा (Tide) आनेवाला हो और आप नोवा स्कोटिया मीनास में मीनास बेसिन के किनारे पर खड़े हों तो आप 14 अरब टन पानी की जो आवाज़ सुनेंगे उसे, ''चन्द्रमा की आवाज़'' कहा जाता है, क्योंकि यहाँ पर दुनिया की सबसे ऊँची समुन्द्री लहरें उठ कर बेसिन में गिरती हैं. जब तक न्यूटन ने अपना सिद्धान्त प्रकाशित नहीं किया तब तक कोई भी सूर्य, चन्द्रमा और ज्वार-भाटा के सम्बन्ध के बारे में नहीं जानता था.[6] समुन्द्र में सफलता पूर्वक यात्रा करने के लिए नाविकों के लिये यह ज़रूरी है कि वे ज्वार-भाटा के आने के बारे में भली प्रकार परिचित हों. चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव के बारे में जानना नाविकों की केवल मदद ही नहीं करता था, परन्तु जैसा कि मैंने अभी जल्दी में समुन्द्र की लहरों से खेलने वाले उत्सुक मित्र से सीखा है कि सबसे ऊँची लहरें नये चाँद और पूर्णिमा के दिन ही आती हैं. इन लहरों को छलाँगें मारनेवाली लहरें (Spring tide) कहा जाता है.

> जब चन्द्रमा नया या पूरा होता है सूर्य और चन्द्रमा का गुरुत्व बल आपस में मिल जाता है. ऐसे समय में ऊँची लहरें (ज्वार) बहुत ऊँची होती हैं और नीची लहरें (भाटा) बहुत ही नीची होती हैं. इसे छलाँगें मारने वाली ऊँची लहरें कहा जाता है. छलाँगें मारने वाली लहरें खाश तौर से काफी ताक़तवर लहरें होती हैं (इन लहरों का बसन्त के मौसम से कुछ लेना-देना नहीं है). **ये लहरें तब उठती हैं जब पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा तीनों एक सीध में होते हैं. चन्द्रमा और सूर्य दोनों ही शक्तियाँ ज्वार-भाटा के लिये जिम्मेदार होती हैं.** छलाँगें मारने वाली (Spring) लहरें पूर्णमासी और नये चान्द के दिन उठती हैं.[7]

जब सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी तीनों एक सीध में होते हैं पृथ्वी पर अधिक शक्तिशाली गुरुत्वाकर्षण पैदा होता है और इसके कारण अधिक ऊँची तरंगें उठती हैं. यद्यपि सूर्य का गुरुत्वाकर्षण, चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण से काफी अधिक होता है, चन्द्रमा, पृथ्वी के अधिक निकट होने के कारण इसका पृथ्वी के ऊपर प्रभाव सूर्य के प्रभाव से दो गुणा अधिक होता है. छलाँगें मारनेवाली लहरों का कारण सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी का एक सीधी रेखा में आना है.

---

[6] http://www.thehighesttides.com/what-causes-the-highest-tides.shtml

[7] http://home.hiwaay.net/~krcool/Astro/moon/moontides/

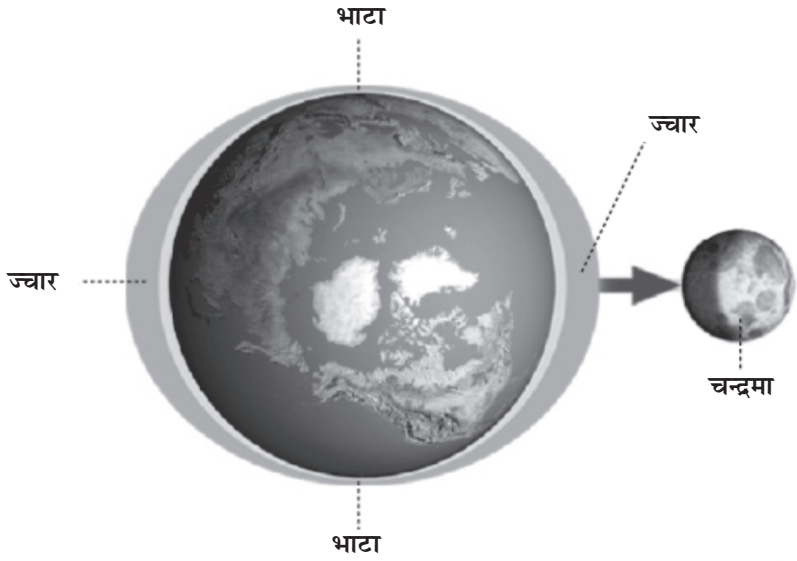

प्रत्येक पन्द्रह दिन के अन्तराल पर आने वाले इस ज्वार भाटे का समुन्द्र और समुन्द्र में पाये जाने वाले जीव जन्तुओं के ऊपर गहरा असर पड़ता है. यदि आप कभी भी पूरे चाँद के 4 से 6 दिन बाद ऑस्ट्रेलिया में उत्तरी क्वींसलैण्ड के ग्रेट बैरियर रीफ के किनारे समुन्द्र में तैर रहे हैं, तो आप इस ग्रह पर बहुत बड़ी मात्रा में मछलियों और मेढकों के अण्डों के गुच्छों को तैरता हुआ देखेंगे. शान्त लहरों को अधिकाँश मछलियों की प्रजातियाँ पसन्द नहीं करती हैं, इसलिये जब लहरें आती हैं तब वे इसका लाभ उठाते हुए अपने अण्डों को बहाकर खुले पानी की सुरक्षा में लेकर चली जाती हैं.[8]

लेकिन चन्द्रमा का चक्र जानवरों के गर्भकाल को भी प्रभावित करता है, जिस प्रकार से महिलाओं के मासिक धर्म का चक्र भी चन्द्रमा के मासिक चक्र के लगभग बराबर ही होता है.[9] इस प्रकार से स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं कि गर्भाधान और संतानोत्पत्ति तथा चन्द्रमा के मासिक चक्रों के बीच में कोई विशेष सम्बन्ध है.

क्या हम प्रकृति की लहरों से कुछ सीख सकते हैं? क्या सूर्य और चन्द्रमा का पृथ्वी के साथ जो सम्बन्ध है उससे हमारे आत्मिक सम्बन्धों के रहस्य को समझने में कोई सहायता मिल सकती है? यदि भौतिक जीवन की सफलता और उपजाऊपन का सम्बन्ध सूर्य और चन्द्रमा के पृथ्वी के साथ सम्बन्ध के साथ

[8] http://www.greatbarrierreefs.com.au/coral-spawning/
[9] https://en.wikipedia.org/wiki/Tide#Biological_rhythms

जुड़ा हुआ है तो क्या हम इसके द्वारा आत्मिक क्षेत्रों के लिए भी कोई पाठ सीख सकते हैं?

इस दिशा में आगे बढ़ने से पहले आइये हम सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी के बीच में पाये जाने वाले एक दूसरे रुचिकर सम्बन्ध पर ध्यान दें. चन्द्रमा का प्रकाश उसका अपना प्रक्राश नहीं होता है. यह एक निष्क्रिय (Passive) वस्तु है. चन्द्रमा जो प्रकाश देता है, वह प्रकाश सूर्य के प्रकाश का परावर्तन (Reflection) है. सूर्य अपना प्रकाश स्वयं बनाता है, यह एक सक्रिय (Active) वस्तु है. चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश से चमकता है. सक्रिय सूर्य और निष्क्रिय चन्द्रमा दोनों मिलकर पृथ्वी के ऊपर लय बनाने

वाला प्रभाव डालते हैं. क्या यहाँ पर पुनः हम देख सकते हैं कि सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पाया जानेवाला सम्बन्ध हमारे आत्मिक संसार के बारे में कई पाठ सिखाता है?

इस बात पर ध्यान दीजिये कि जब आप सूर्य को नंगी आँखों से देखते हैं तो क्या होता है? सूर्य की चमक इतनी अधिक तेज़ होती है कि हम कुछ पल से अधिक समय के लिए सीधे सूर्य को नहीं देख सकते हैं. सूर्य को देखने से हम अंधे हो सकते हैं. क्या सूर्य को देखने का कोई रास्ता हो सकता है? हाँ, हम चन्द्रमा को देखने के द्वारा सूर्य की रौशनी को देख सकते हैं. हमारी आँखें ख़राब होने का ख़तरा भी नहीं रहता है जब सूर्य से आनेवाली रौशनी चन्द्रमा के माध्यम से हम तक पहुँचती है. चन्द्रमा के माध्यम से हम तक पहुँचनेवाली रौशनी हमारी आँखों के लिये सुरिक्षित है. जो सवाल पूछे जाने की माँग करता है वह है, ''क्या इसका कोई अर्थ भी है?'' समस्त जीवन के लिए अधिकार रखने वाली सूर्य की उपस्थिति अनिवार्य है. इसकी किरणें हमें गर्मी और प्रकाश देती हैं, और इस ग्रह को उपजाऊ बनाने में सूर्य की किरणें अहम भूमिका निभाती हैं, यदि हम सूर्य का सम्मान न करें तो यह हमें नुकसान भी पहुँचा सकता है. फिर से, क्या यहाँ पर कोई ऐसी बात है जो हम सीख सकते हैं?

यूहन्ना, बुजुर्ग नबी जब भूमध्यसागर में पतमुस नामक टापू पर बन्दी था, उसने दर्शन में एक महान चमत्कार देखा:

फिर स्वर्ग में एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया, अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँवों तले था, और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट था. प्रकाशितवाक्य 12:1

यहाँ पर यूहन्ना सूर्य, चन्द्रमा, तारों और स्त्री के बीच में पाये जाने वाले सम्बन्ध का वर्णन करता है. वह चन्द्रमा के ऊपर खड़ी है. चन्द्रमा उसकी नींव है. वह सूर्य के प्रकाश का वस्त्र ओढ़े है, और बारह तारों का प्रकाश उसे प्रकाशित कर रहा है. सूर्य, चन्द्रमा और तारों के चक्र के साथ उसका तालमेल बना हुआ है. इस बात को ध्यान में रखते हुए कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आत्मिक बातों के विषय में है, तो क्या इसका कोई आत्मिक महत्व नहीं हो सकता है?

इससे पहले कि हम इस प्रश्न का उत्तर दें, हमें यह प्रश्न पूछना आवश्यक है,'' आत्मिक विषयों में क्या हम बाईबल के लेखों की विश्वासयोग्यता पर भरोसा कर सकते हैं?''

4. आत्मिक नक्शा और दिशा बतानेवाला यन्त्र

यहूदिया में रोमी राज्यपाल पिलातुस ने अपने न्यायासन के समाने खड़े होनेवाले अनेक अपराधियों के चेहरों को पढ़ा था. जो आदमी अभी उसके सामने खड़ा था, उसके चेहरे की चमक बिल्कुल अलग थी. बाहर खड़ी हुई भीड़ चीख-चीखकर उसकी मौत की माँग कर रही थी, लेकिन उसकी आँखों में भय का कोई नामो-निशान नहीं था. पिलातुस निदर्यी अपराधियों के चेहरों से परिचित था, और जो आदमी अभी उसके सामने खड़ा था निश्चय ही वह उन अपराधियों में से नहीं था. उसका उत्तम आचरण और शान्त स्वभाव देखकर न्यायधीश अचम्भित हो गया. उसने इस संसार के परे एक राज्य की बात कही थी-एक ऐसा राज्य जो राजनीति, आक्रमणों और युद्धों की पहुँच से परे हो. उसके ऊपर यह आरोप लगाया गया था कि, ''यहूदी बहुत समय से जिस मसीह की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसने वही मसीहा होने का दावा करते हुए रोमी सरकार के विरुद्ध षड्यंत्र रचा था.''

> पिलातुस ने उससे कहा, ''तो क्या तू राजा है?'' यीशु ने उत्तर दिया, ''तू कहता है कि मैं राजा हूँ. मैं ने इसलिए जन्म लिया है और इसलिए संसार में आया हूँ कि सत्य की गवाही दूँ. जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है.''
> यूहन्ना 18:37

एक राजा जो सत्य की साक्षी देता है? अब तक ऐसा कौन सा राजा हुआ है जिसने सत्य की साक्षी दी है? राजा लोग तो प्राय: अपनी सत्ता को हासिल करने और बनाये रखने के लिए युद्ध, धोखा, षड्यंत्र और नियंत्रण का सहारा ले रहे हैं. फिर पिलातुस ने बहुत ही नाजुक प्रश्न किया. ''सत्य क्या है?'' दूसरे शब्दों

में कहा जा सकता है, ''हम सत्य को किस प्रकार जान सकते हैं?''

प्रत्येक व्यक्ति जो सोचने और समझने की क्षमता रखता है, उसके पास अधिकार, विवेक की शक्ति , एक स्थान या व्यक्ति जहाँ पर उन्हें भरोसा है कि वे जीवन और मृत्यु की वास्तविकताओं के बारे में सही जानकारी हासिल कर रहे हैं. बहुत से लोगों के लिए इन बातों को स्रोत उनका अपना ही मन है. वे जो कुछ देखते, सुनते, अनुभव करते और अध्ययन करते हैं, केवल उसी के आधार पर वे सत्य का निर्धारण करते हैं. उन्हें पूरा भरोसा है कि जिस चश्मे (लैंस) के द्वारा वे दुनिया को देख रहे हैं उसमें किसी प्रकार का कोई खोट नहीं है. एक संक्षिप्त यादगार कि बालक जब पारिवारिक नियमों को तोड़ते हैं और जब उन्हें इस बात का ऐहसास दिलाया जाता है तो वे किस प्रकार से प्रतिक्रिया करते हैं, इससे हम समझ सकते हैं कि हमारे अन्दर अपनी परिस्थितियों के अनुसार सत्य को तोड़ने-मरोड़ने की प्राकृतिक आदत पाई जाती है. दूसरा उदाहरण हम राजनेताओं का ले सकते हैं कि वे मीडिया द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार से देते हैं कि पूछे गये प्रश्न को पूरी तरह से टाल जाते हैं. जबकि हम सबके अन्दर अपनी सुविधा के लिए सत्य को तोड़ने और मरोड़ने की प्राकृतिक आदत पाई जाती है तो क्या हम सत्य की खोजने करने के लिए अपनी सोच और अपनी समझ पर भरोसा कर सकते हैं?

एक और समूह ऐसे लोगों का है जो उनके पूर्वजों द्वारा उन्हें सौंपी गई परम्पराओं के ऊपर आँख मूँद कर विश्वास कर लेते हैं. स्पष्ट सत्य को जानने के लिए हम अपने ऊपर या अपने पूर्वजों के ऊपर किस प्रकार से भरोसा कर सकते हैं? जब कि हम जानते हैं कि हम स्वयं सत्य को तोड़ने मरोड़ने में माहिर हो चुके हैं तो हम उन लोगों के ऊपर किस प्रकार से भरोसा कर सकते हैं जो हमसे पहले हुए हैं?

जबकि इन्सानी प्रवृत्ति झूठ बोलने, धोखा देने, बात को बढ़ा-चढ़ा कहने या किसी भी चीज़ को कम/अधिक समझने की है तो हम सत्य का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं? यह बात हमें एक बार फिर पिलातुस के सवाल पर लेकर आती है, ''सत्य क्या है?'' उसके सामने एक आदमी खड़ा था जिसने अपने आपको इस विषय पर पूरी तरह से परखे जाने के लिए पेश किया था. उसने कहा था कि वह सत्य की गवाही देने के लिए आया था, और उसका दावा था कि वह मसीह था जिसकी परीक्षा आसानी की जा सकती थी.

> उसने उनसे कहा, ''परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?'' शमौन पतरस ने उत्तर दिया, ''तू जीविते परमेश्वर का पुत्र मसीह है.'' यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि माँस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है.'' मत्ती 16:15-17.

इस बात का दावा करते हुए कि वह मसीह था, यीशु अपने आप को पुराने नियम की उन भविष्यद्वाणियों का विषय बना रहा था जो मसीह के बारे में की गईं थीं. ये सब भविष्यद्वाणियाँ यीशु के समय से सैकड़ों वर्ष पहले लिखी गईं थीं. आइये उसके जन्म के बारे में कुछ भविष्यद्वाणियों पर ध्यान दें.

जब तक शीलो न आए, तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देनेवाल अलग होगा; और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएँगे. उत्पत्ति 49:10.

यह भविष्यद्वाणी यह बताती है कि मसीह का जन्म यहूदा के गोत्र में होगा.

हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हज़ारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से वरन् अनादि काल से होता आया है. मीका 5:2.

यह भविष्यद्वाणी भी यही बताती है कि मसीह का जन्म बैतलहम में होगा. इस्राएल में बैतलहम नाम के दो शहर थे और यहाँ पर स्पष्ट बताया गया है कि जहाँ मसीह का जन्म होनेवाला था वह शहर बैतलहम एप्राता था.

अगली भविष्यद्वाणी बहुत ही अद्‌भुत् है क्योंकि यह मसीह के पैदा होने का समय बताती है. इसी भविष्यद्वाणी के द्वारा पूर्व से बुद्धिमान लोग आकार मसीह को भेंट चढ़ा सके.

इसलिये यह जान और समझ ले, कि यरूशलेम को फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे. फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर से बसाया जाएगा. उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा, परन्तु स्वयं के लिए नहीं....वह प्रधान एक सप्ताह के लिए बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा, परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा... दानिय्येल 9:25–27.

मसीह के विषय में अनेकों–अनेक भविष्यद्वाणियों में से ये थोड़ी सी हैं. यदि आप इस विषय में खोजबीन करें कि यीशु मसीह नाम के व्यक्ति ने किस प्रकार से भविष्यद्वाणियों को पूरा किया, आप पायेंगे कि पवित्रशास्त्र अद्‌भुत् रीति से पूरा होता है. एक लेखक ने इन भविष्यद्वाणियों में से 48 के केवल एक व्यक्ति द्वारा पूरे होने की गणना की है.[10] इसका परिणाम 10^{157} में केवल 1 है. जिसका अर्थ

10,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000,000 में 1 है.

[10] Evidence that Demands a verdict, Josh McDowell (1972) p.167

तुलना करने के लिए पूरे विश्व में प्रोटोन्स की अनुमानित संख्या 10^{137} है. दूसरा उदाहरण पूरी पृथ्वी के ऊपर पाये जानेवाले रेत के ढेर में रेत का एक कण खोजने का दिया जा सकता है. सोचें कि 10^{17} का परिणाम क्या होगा. यह इतनी छोटी सी संख्या का प्ररिणाम यह होगा कि पूरा फ्राँस देश 1 यूरो के सिक्कों से 60 सेन्टीमीटर गहराई तक ढक जायेगा. किसी एक सिक्के पर X का निशान लगायें, फिर सिक्कों को आपस में मिला दें और किसी की आँखों पर पट्टी बाँधकर उससे कहें कि पहले ही प्रयास में वह उस सिक्के को खोज कर दिखाये जिसके ऊपर X का निशान लगा हुआ है. संभावनाएँ आश्चर्यचकित करने वाली हैं, और यह केवल मसीह से सम्बन्धित भविष्यद्वाणियों के बारे में है.

दानिय्येल की किताब में संसार के साम्राज्यों के गिरने और उठने के बारे में दूसरी भविष्यद्वाणियाँ भी हैं जो शत्प्रतिशत पूरी हुई हैं. कुछ लोगों ने आरोप लगाया है कि इन भविष्यद्वाणियों के पूरे होने की सम्भावना बहुत कम है इसलिए वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि ये बातें उन घटनाओं के बाद लिखी गई हैं जिनके बारे में ये वर्णन करती हैं.

1946 के बाद खोज में प्राप्त हुए *'द डेड सी स्क्रॉल्स'* में पुराने नियम का अधिकाँश भाग पाया जाता है और इसके लिखे जाने का समय तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है जो यह साबित करता है कि ये भविष्यद्वाणियाँ यीशु मसीह के जन्म से कम से कम 200 वर्ष पहले लिखी गईं थीं. इतिहास में कोई दूसरा ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ है जिसके बारे में की गईं भविष्यद्वाणियाँ अक्षरश: पूरी हुई हों और बाईबल के अलावा दूसरी कोई

और ऐसी किताब नहीं है जो भविष्य के बारे में इतनी सटीक भविष्यद्वाणी करती हो. इस प्रकार की भविष्यद्वाणी को नज़रअन्दाज़ करना तब तक असंभव है जब तक हम राजनेताओं के समान जिससे हमारा फायदा नहीं हो सकता है उसे तोड़ना मरोड़ना शुरू न करें. मैं आपको बाईबल की भविष्यद्वाणियों का, विशेष रूप से यीशु मसीह के बारे में की गईं भविष्यद्वाणियों का सत्यापन करने के लिए आमन्त्रित करता हूँ. यदि आपके पास इन्टरनेट की सुविधा है तो आप यूट्यब पर डॉक्टर वॉल्टर वीइथ की प्रस्तुति, ''बाईबल प्रॉफेसी ऑव जीसस. जस्ट अनॉदर मैन?''[11] अवश्य देखें.

मसीह के बारे में की गईं भविष्यद्वाणियों का शत् प्रतिशत पूरा होना हमें बताता है कि जो कुछ उसके बारे में कहा गया है वह इस योग्य है कि हम उसे गंभीरता से लें. स्रोत और माध्यम के सिद्धान्त के साथ जिसका हम अब तक अध्ययन कर चुके हैं, आइये बाईबल को देखें कि इसके द्वारा जीवन के नमूने को किस प्रकार से समझा जा सकता है.

[11] https://www.youtube.com/watch?v=gdXbT5cII7U

5. स्वर्गीय नमूना

पिलातुस ने यीशु से एक नाजुक सवाल किया था. ''सत्य क्या है?'' यदि वह उत्तर सुनने के लिए रुकता तो उसे शायद यह उत्तर मिलता. ''मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ: बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता.'' यूहन्ना 14:6. यीशु मसीह सत्य को अपने पिता से सम्बन्ध के साथ जोड़कर पेश करता है. पिता तक पहुँचने का मार्ग वही है. एक दूसरे स्थान पर अपने अनुयाईयों के बारे में बातें करते हुए यीशु ने अपने चेलों से पूछा,

> उसने उनसे कहा, ''परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?'' शमौन पतरस ने उत्तर दिया, ''तू जीविते परमेश्वर का पुत्र मसीह है.'' यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि माँस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है.'' मत्ती 16:15-17.

पिलातुस के प्रश्न का उत्तर यह था कि यीशु ही सत्य है, और इस सत्य का सार यह है कि पिता के पास पहुँचने के लिये यीशु ही मार्ग या माध्यम है. स्वर्गीय नमूने की यही सच्चाई है, और कुरिन्थियों के नाम अपने पहले पत्र में पौलुस इस नमूने की परिभाषा इस प्रकार से देता है.

> तौभी हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता **जिसकी ओर से** सब वस्तुएँ हैं, और हम उसी के लिये हैं. और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह **जिसके द्वारा** सब वस्तुएँ हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं. 1 कुरिन्थियों 8:6

पिता और यीशु मसीह के नाम के तुरन्त बाद प्रयोग होने वाले दो शब्दों के द्वारा यह नमूना प्राप्त होता है.

व्यक्ति	नमूना	स्ट्रॉंग की कॉनकोर्डेन्स से परिभाषा
पिता	ἐκ—जिससे	एक, एक्स, एक प्राथमिक पूर्वसर्ग जो उत्पत्ति, स्रोत (जहाँ से कार्य या गति आरम्भ होती है) को दिखाता है.
यीशु मसीह	δια जिसके द्वारा	डिया, डीअहा, एक प्राथमिक पूर्वसर्ग जो कार्य के माध्यम को दिखाता है

विश्व के सम्बन्ध के नींव का पत्थर:जिसकी ओर से और जिसके द्वारा है. पिता ही ''सब वस्तुओं का स्रोत'' है. और यीशु मसीह ही सब वस्तुएँ प्राप्त करने के लिए एक मात्र माध्यम है. यहाँ पर हम विश्व के सम्बन्धों का सिद्धान्त पाते हैं जिसमें जीवन भी शामिल है. हम इस बात को इस प्रकार से भी कह सकते हैं, जहाँ पर जो zoe जीवन के लिए यूनानी शब्द है.

ἐκ→δια= ζωη
स्रोत—माध्यम=जीवन

जीवन किस प्रकार से प्राप्त होता है, उस उदाहरण को अपने दिमाग़ में रखें. पिता (ἐκ→स्रोत) अपना बीज माता (διὰ माध्यम) को देता है और जीवन की शुरूआत होती है. उत्पत्ति की पुस्तक में बताये गये प्राणियों की उत्पत्ति का रहस्य यही है.

> तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह माँस भर दिया. और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया. उत्पत्ति 2:21, 22.

आदम और हव्वा के बीच में क्या रिश्ता है? ἐκ→διὰ. जिसकी ओर से→जिसके द्वारा. प्राणियों का स्रोत आदम में था (जिसकी ओर से). उसमें से जीवन की उत्पत्ति को बनानेवाला जीवित पदार्थ निकलकर, स्त्री (जिसके द्वारा) की ओर आया. और इस प्रकार से इस संसार में पैदा होनेवाले प्रत्येक बालक को जीवन पाने के लिए ἐκ→διὰ(स्रोत-माध्यम) की ज़रूरत होती है. आदम ने जब यह बात कही तो वह इस सम्बन्ध को भली प्रकार से समझ चुका था.

> तब अरइम ले कहा, ''अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे माँस में का माँस है; इसलिये इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह **नर में से निकाली गई** है.'' उत्पत्ति 2:23.

पवित्रशास्त्र के प्रेरित वचनों की मदद से हम पिता और पुत्र के सम्बन्ध को देख व समझ सकते हैं. इस सम्बन्ध को देखते हुए हमें विश्व के सृजन का सिद्धान्त मिल जाता है, जो ἐκ→διὰ स्रोत →माध्यम है. एक बार पुन: वचन से कुछ पदों को देखते हैं.

> फिर परमेश्वर ने कहा, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ...''तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की.उत्पत्ति 1:26,27.

> और सब पर यह बात प्रकाशित करूँ कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था जिसने सब वस्तुओं का सृजन यीशु मसीह के द्वारा किया; इफिसियों 4:9.

> सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई. उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था. यूहन्ना 1:3-4.

परमेश्वर ने सब वस्तुओं का सृजन यीशु मसीह के द्वारा किया है. यह उसका पुत्र ही था जिससे परमेश्वर ने कहा, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनायें.'' वह सम्बन्ध जिसके द्वारा मानव जाति बनाई

गई वह सम्बन्ध पिता और पुत्र का सम्बन्ध था, और वह सम्बन्ध इस प्रकार से है: ἐκ→δια (स्रोत→ माध्यम).

> उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक वे निरुत्तर हैं... रोमियों1:20

रोमियों की किताब हमें बताती है कि अदृश्य परमेश्वर के गुण उन वस्तुओं के द्वारा दिखाई देते हैं जो बनाई गयी हैं. कौन सी विशेष वस्तु है जो परमेश्वर की समानता में बनाई गई थी? पुरुष और स्त्री और उन दोनों के बीच में पाया जानेवाला रिश्ता. पुरुष और स्त्री के बीच में पाया जानेवाला सम्बन्ध विश्व के लिये पिता और पुत्र के सम्बन्ध के नमूने के ऊपर आधारित है. मन में इन विचारों को रखते हुए आइये हम बाईबल से कुछ और पदों को देखें.

> ताकि उनके मनों में शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहचान लें. जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं. कुलुस्सियों 2:2-3

पिता और पुत्र का सम्बन्ध ही है जिसे सृष्टि के स्वर्गीय हस्ताक्षर के रूप में पेश किया गया है. यदि आप आसमान की ओर देखें तो इस हस्ताक्षर को सूर्य और चन्द्रमा के ऊपर देखेंगे. जब आप जीव उत्पत्ति को देखें तो आप इस स्वर्गीय हस्ताक्षर को पायेंगे. इस स्वर्गीय चाबी के साथ हम बुद्धि और ज्ञान के सभी ख़जानों को खोल सकते हैं.

> परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं. 2 कुरिन्थियों 3:18

इस स्वर्गीय हस्ताक्षर ἐκ→δια (स्रोत→माध्यम) को पिता और पुत्र में देखने के द्वारा, हमारी सोच, हमारी भावनाएं, हमारे सम्बन्ध और हमारा अध्ययन आदि बदलते जाएंगे. मैं इस सम्बन्ध को पूरी तरह से प्रतिभाशाली पाता हूँ कि सब बुद्धि और ज्ञान का रहस्य वास्तव में पिता और पुत्र के सम्बन्ध के ज्ञान के साथ जुड़ा हुआ है. उनके बीच में पाये जानेवाले सम्बन्ध की ग़लत समझ अपने आप ही उस चाबी को ख़राब कर देती है और ज्ञान और बुद्धि धूमिल हो जाते हैं. जबकि, इस सच्चे ज्ञान और पिता और पुत्र के ऊपर निरंतर मनन करने से, यह नमूना हमारे सचेतन मन में स्पष्ट होने लगता है और हमारे मन और हृदय को उनके मन और हृदय के साथ जोड़ने लगता है जिनके साथ हम जुड़े हुए हैं.

तालिका 1–स्रोत सिद्धान्त

बाईबल पद		**स्रोत (पिता) ἐκ→**	**माध्यम (पुत्र)διὰ**
वह (मसीह) तो **अदृश्य** परमेश्वर का **प्रतिरूप** और सारी सृष्टि में पहिलौठा है. कुलुस्सियों 1:15	1	अदृश्य	दृश्य
वह (मसीह) उसकी (पिता की) **महिमा** का **प्रकाश** और उसके तत्व की छाप है...जितना उसने उनसे बड़े पद का **वारिस** होकर उत्तम नाम पाया. इब्रानियों 1:3, 4. इस कारण **परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है...परमेश्वर पिता की महिमा के लिए** हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु समीह ही प्रभु है. फिलिप्पियों 2:9–11	2	महिमा	प्रकाश (बड़ाई करनेवाला)
पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; यूहन्ना 5:19. परन्तु मैं यह चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि...**मसीह का सिर परमेश्वर है.** 1 कुरिन्थियों 11:3	3	सिर–अधिकार	अधीनता
और स्वर्गदूतों में से उसने किस से कब कहा, ''तू मेरे दाहिने **बैठ,** जब तक कि **मैं** तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे की पीढ़ी न कर दूँ?''इब्रानियों 1:13. जो परमेश्वर के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पायेगा. भजन संहिता 91:1	4	सुरक्षा देनेवाला	सुरक्षा प्राप्त करनेवाला
और देखो, यह आकाशवाणी हुई: ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ.'' मत्ती 3:17. यीशु ने उत्तर दिया: ''लिखा है, मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा.''मत्ती 4:4	5	आशीषें देनेवाला	आशीषें प्राप्त करनेवाला
क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है...यशायाह 57:15 और वचन देहधारी हुआ;...हमारे बीच में डेरा किया... यूहन्ना 1:14	6	अनुभवातीत (निकटता)	आसन्न (अधिक निकटता)
मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि अन्य कोई अपने ही नाम से आए तो उसे ग्रहण कर लोगे. यूहन्ना 5:43	7	प्रतिनिधि (विचार)	पेश करनेवाला (वचन)

केवल पिता और पुत्र के सम्बन्ध को देखने से ही ऊपर दी गई तालिका में अनेक सिद्धान्त प्रगट होते हैं. आनेवाले अध्यायों में हम इन सिद्धान्तों के विषय में विस्तार से बातें करेंगे.

तालिका 2-माध्यम के उदाहरण

स्रोत ɛ́K⟶	**माध्यम δια**	
पति	पत्नी	**स्त्री** का सिर **पुरुष** है. 1 कुरिन्थियों 11:3
माता-पिता	बालक	अपने पिता और अपनी माता का आदर कर. मत्ती 19:19
मसीह	कलीसिया	क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि **मसीह कलीसिया** का सिर है. इफिसियों 5:23
प्राचीन	झुण्ड	कि परमेश्वर के उस **झुण्ड** की, जो तुम्हारे बीच में है **रखवाली करो**...1 पतरस 5:2
शासक	नागरिक	हर **एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे,** क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराये हुए हैं. रोमियों 13:1
तर्क (Reason)	भावनाएं	सब बातों को परखो; जो अच्छी है उसे पकड़े रहो. 1 थिस्सुलुनीकियों 5:21
विश्वास	कार्य	...केवल **विश्वास** जो प्रेम के द्वारा **प्रभाव डालता है**. गलातियों 5:6
मसीह	बाईबल	तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्रशास्त्र में से अपने विषय में लिखी बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया. लूका 24:27. तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिला है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है. यूहन्ना 5:39
पुराना नियम	नया नियम	यह न समझो, कि मैं **व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं** की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ,...परन्तु **पूरा करने आया हूँ**. मत्ती 5:17
पहली 4 आज्ञाएं	अन्तिम 6 आज्ञाएं	उसने उससे कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख. **बड़ी और मुख्य** आज्ञा तो यही है. और उसी के समान यह **दूसरी** भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख." मत्ती 22:37-39
बीज	फसल/पेड़	"एक बोनेवाला **बीज** बोने निकला...कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और उगकर सौ गुणा **फल** लाया." लूका 8:5-8
सूर्य	चन्द्रमा	तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाईं; उनमें से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिए और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिए बनाया...उत्पत्ति 1:16

यह तालिका, पहली वाली तालिका की छवि है. दोनों के बीच में सम्बन्ध ɛ́K⟶δια स्रोत-माध्यम है.

हमारे संसार में कार्य करनेवाले स्वर्गीय हस्ताक्षर के अनेक रूप देखे जा सकते हैं. जब सम्बन्ध बदलते हैं स्रोत और माध्यम की स्थिति बदल जाती है. उदाहरण के लिए पति और पत्नी के रिश्ते में पति स्रोत है और पत्नी माध्यम है. माता और बालक के रिश्ते में माता स्रोत है और बालक माध्यम है.

जब हम पहली तालिका में वर्णन किये गये स्वर्गीय नमूने के सिद्धान्तों को लेकर दूसरी तालिका में बताये गये सम्बन्धों में लागू करते हैं तब हम पृथ्वी के पिण्डों और स्वर्गीय वस्तुओं के बीच में पाये जानेवाले तालमेल का रहस्य समझ जाते हैं–जिसका अर्थ है पिता और पुत्र के बीच पाया जानेवाला सम्बन्ध.

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि दूसरी तालिका में दिये गये स्रोत के उदाहरण में उनका अधिकार और सामर्थ्य अन्ततः परमेश्वर में ही पाये जाते हैं. परमेश्वर के अलावा दुनिया में और किसी के भी पास सर्वोच्च अधिकार नहीं है, और सम्बंधित माध्यम से जब कोई निवेदन किया जाता है तो यह निवेदन पूरी तरह से परमेश्वर के अधिकार के साथ तालमेल में होना चाहिए. यदि वे तालमेल में नहीं हैं तो न केवल यह अधिकार है परन्तु जो माध्यम बीच में है उसका यह कर्तव्य भी है कि उसे अपने से ऊँचे अधिकार वाले व्यक्ति से अपील करना चाहिए.

जो सिद्धान्त हमने अब तक सीखे हैं उनका सारांश इस प्रकार है:

1. अदृश्य और दृश्य:
   माध्यम स्रोत को प्रगट करता है या फिर यह स्रोत तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है.
2. महिमा और प्रकाश: माध्यम अपने स्रोत को महिमा देता है.
3. मुखिया और समर्पण: माध्यम अपने स्रोत के अधीन रहता है.
4. स्रोत अपने माध्यम की सुरक्षा करता है.
5. स्रोत अपने माध्यम को आशीषित करता है.
6. स्रोत अपने माध्यम की आवश्यकताएं पूरी करता है.
7. माध्यम के द्वारा स्रोत का प्रतिनिधित्व किया जाता है.

हमारी सूची माध्यम के कार्यों के साथ शुरू होती है क्योंकि यह उसी प्रकार से स्रोत तक पहुँचाता है जैसे कि मसीह यीशु हमें पिता तक पहुँचाता है. एक बार जब हम स्रोत के साथ जुड़ जाते हैं, तब हम इसके कार्यों को प्रगट कर सकते हैं.

जिन सिद्धान्तों का हमने अध्ययन किया है वे स्वर्गीय नमूने का सार प्रगट करते हैं. इस नमूने की सुन्दरता और तालमेल की पूरी तरह से सराहना करने के लिए, जिस प्रकार से दूसरी तालिका में दिखाया गया है, हमें प्राकृतिक रूप से इसको महिमान्वित करना होगा. इस श्रृंखला में छपनेवाली पुस्तिकाओं की यही विषयवस्तु रहेगी.

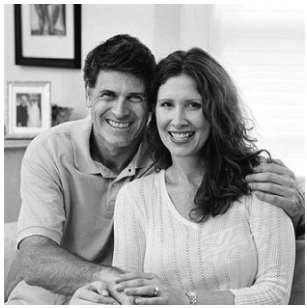

पति और पत्नी

माता-पिता और बालक

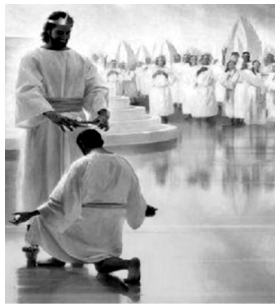

मसीह और कलीसिया

बीज और वृक्ष

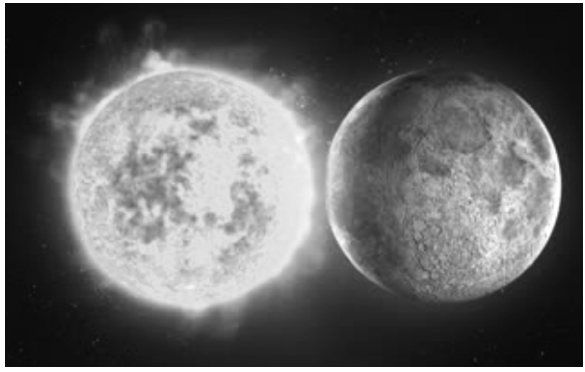

सूर्य और चन्द्रमा

6.जीवन की धारा/स्रोत

स्वर्गीय नमूने के परिचय को पूरा करने के लिए हमें साधारण रूप से यह प्रश्न पूछना होगा,''किस वस्तु के स्रोत और किसका माध्यम?'' आइए एक बार पुन: बाईबल के इस विशेष पद को देखें:

> तौभी हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिये हैं. और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिसके द्वारा सब वस्तुएं हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं. 1 कुरिन्थियों8:6

साधारण सा उत्तर है सब वस्तुएं. इसलिये सब वस्तुओं में कौन कौन सी वस्तुएं शामिल हैं?

> फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई , जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचोबीच बहती थी. प्रकाशितवाक्य 22:1, 2

इस आयत में मेम्ने का मतलब परमेश्वर के पुत्र से है (यूहन्ना 1:29). सभी प्रकार का जीवन परमेश्वर में से निकलता है और पुत्र में से होकर बहता है. पिता जीवन का स्रोत है और पुत्र जीवन प्राप्त करने के लिए एक मात्र माध्यम है. यह जीवन हम तक पवित्र आत्मा के द्वारा पहुँचता है. आत्मा को प्राय: प्रकाश, जल, हवा और बाईबल में आग के द्वारा भी प्रगट किया गया है. परमेश्वर के आत्मा के द्वारा ही हम पिता की आशीषों का अनुभव करते हैं. केवल एक ही माध्यम-परमेश्वर का पुत्र है जिसके द्वारा हम इस

आत्मा को प्राप्त कर सकते हैं.

> यीशु ने फिर उसने कहा,''तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ.'' यह कहकर उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, ''पवित्र आत्मा लो.'' यूहन्ना 20:21-22

वर्तमान समय में पूरे संसार को जीवन क्रूस पर दिये गये यीशु के बलिदान के द्वारा मिलता है. जो लोग जीवन के इस स्रोत का तिरस्कार करते हैं वे अन्ततः अपने आपको जीवन के इस स्रोत से अलग कर लेंगे. अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिए हमें इसके स्रोत और माध्यम अर्थात् पिता और पुत्र के सम्बन्ध को पहचानना आवश्यक है.

> और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है. जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है, और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है.

हमारे ऊपर जो आशीषें उंडेली जाती हैं, जीवन उनमें से पहली आशीष है. यहाँ एक और है

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए. यूहन्ना 3:16.

> जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं. 1 यूहन्ना 4:9

प्रेम का स्रोत पिता के हृदय में पाया जाता है और उसके पुत्र के माध्यम से हमारे ऊपर प्रगट किया जाता है. इस प्रकार से प्रेम ही वह धारा है जो स्रोत में से निकलकर बहती हुई माध्यम के द्वारा हम तक पहुँचती है. इस नमूने में प्रेम की धारा को हम अनेक प्रकार से प्रगट सकते हैं.

स्रोत→अदृश्य ἐκ	माध्यम-दृश्य διὰ	धारा/जीवन ζωὴ
विचार	वचन	प्रेम
विचार	गले लगाना	प्रेम

विचार उपहार प्रेम

प्रेम के विचार जो कभी प्रगट नहीं किये गये, कोई नहीं जानता कि वे कभी अस्तित्व में रहे थे और यदि कोई उनके बारे में जानता ही नहीं तो वे न तो प्राप्त किये जा सकते हैं और न ही उन्हें अनुभव ही किया जा सकता हैं. पिता के हृदय को जानने के लिए स्वर्गीय नमूने में परमेश्वर के पुत्र का माध्यम कितना महत्वपूर्ण है !

सूर्य और चन्द्रमा के उदाहरण में हम एक दूसरे महत्वपूर्ण सिद्धान्त को पाते हैं. यदि हम अन्धेरे दिमाग़ में ज्ञान का प्रकाश के आने के बारे में सोचें, उस अन्धेरे में से सीधे सूर्य को देखने से हम अन्धे हो सकते हैं, लेकिन उसी प्रकाश को चन्द्रमा के माध्यम से देखने पर हमें कोई हानि नहीं होगी.

स्रोत→अदृश्य	माध्यम–दृश्य	धारा/जीवन
सूर्य	चन्द्रमा	प्रकाश
माता–पिता	बच्चा	ज्ञान

जिस प्रकार से स्वर्गीय नमूने के द्वारा हम तक प्रकाश पहुँचता है, उसी प्रकार से हमारे संसार का ज्ञान निर्देशों के द्वारा हम तक पहुँचता है. हमें सिखाने के लिए हमारे माता–पिता या हमारे शिक्षकों को हमें पढ़ाना पड़ता है. हम पढ़ने का चुनाव स्वंय कर सकते हैं, लेकिन कैसे पढ़ना है इसकी शिक्षा हमें शिक्षकों के द्वारा ही मिलती है, और हमें दूसरों के द्वारा लिखी हुई किताबें भी मिलनी चाहिए. ज्ञान और बुद्धि प्राप्त करने के लिए ज्ञान की धारा आवश्यक है. दुनिया और हमारे आस–पास के ज्ञान के साथ हमारा जन्म नहीं हुआ है; इनके बारे में हम शिक्षक से या फिर सिखाने वाले किसी इन्सान से ही सीखते हैं. यहाँ पर ध्यान देने योग्य कुछ और उदाहरण दिये गये हैं.

स्रोत(अदृश्य)ἐκ	माध्यम (दृश्य)διὰ	धारा/जीवन ζωή
माता–पिता	बालक	जीवन, प्रेम, आशीषें, सुरक्षा, भोजन, दया, ज्ञान, स्वीकार करना, सुधार, व्यवस्था
शिक्षक	विद्यार्थी	ज्ञान, स्वीकार करना/आशीषें, सुधार और व्यवस्था
मसीह	कलीसिया	जीवन, प्रेम, अनुग्रह, दया, आशीषें, ज्ञान, सुधार और व्यवस्था
प्राचीन	झुण्ड	प्रेम, आशीषें, ज्ञान, सुरक्षा, सुधार, व्यवस्था
शासक	नागरिक	ज्ञान, सुरक्षा,स्वीकार करना, व्यवस्था

इस प्रकार से स्वर्गीय नमूने में ये बातें शामिल हैं:

1. स्रोत
2. माध्यम
3. धारा

स्रोत और माध्यम को सही दशा में रखने से जीवन, आशीषें, फसल और सम्पन्नता प्रदान करने वाली धारा बहने लगेगी. किन्तु जब उन्हें सही दशा में नहीं रखा जाता और उन्हें सही रूप से नहीं समझा जाता है तो हम श्राप, विनाश और अन्ततः मृत्यु की कटनी काटते हैं.

7. ''इस संसार का ईश्वर'' और विरोधी शक्तियों का जन्म

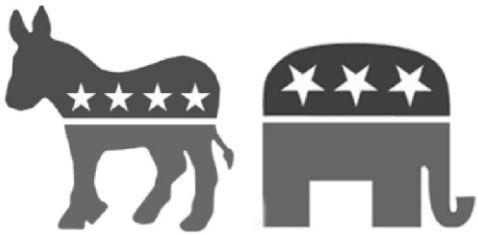

यदि आप किसी प्रजातान्त्रिक देश के सदन (पार्लियामेन्ट हाउस) में प्रवेश करें तो आप सरकार के साथ सहमत रहने वाले प्रतिनिधियों का एक दल पायेंगे और इसके साथ ही आप प्रतिनिधियों का एक ऐसा दल भी पायेंगे जिसे विरोधी दल कहा जाता है. प्रत्येक दिन एक दूसरे के ये विरोधी दल उन बातों के ऊपर चर्चा करते हैं जो देश के सामने हैं. प्रत्येक वक्ता अपनी बातों के द्वारा पूरे सदन को मनाने का प्रयास करता है. चर्चा प्राय: काफी गर्मागरम और तनाव पैदा करने वाली होती है. पुरातन काल से भारतीय और यूरोपियन दर्शन के ऊपर पाये जाने वाले विरोधाभास को दूर करने के लिये इस प्रकार की चर्चा करने की परम्परा स्थापित की गई है. यूनानी भाषा में डायालेक्टिक के नाम से विख्यात, सुकरात के सन्देशों में इसे प्लैटो ने प्रसिद्धि दिलायी थी और आज के संसार में सोच विचार करने का एक माध्यम बन चुकी है.[12] यद्यपि ये शक्तियाँ एक दूसरे की विरोधी लगती हैं लेकिन वास्तव में उन्हें एक दूसरे का पूरक माना जाता है, और इस संघर्ष में से जो निष्कर्ष निकलता है, यह माना जाता है कि उन लोगों के लिए जो इसमें शामिल हैं और जो लोग इससे प्रभावित होने वाले हैं उन सब के लिये यह एक ऊँचे स्तर की सच्चाई और गुणवत्ता को प्रगट करता है.

यदि हम इस सिद्धान्त को पूरब की परम्पराओं के साथ जोड़ कर देखें तो चीन में हम यीन और याँग के दर्शन को देखें जिसमें विलोम जैसे प्रकाश और अन्धकार, आग और पानी और नर तथा मादा वास्तव में एक दूसरे के पूरकबताये गये हैं और सन्तुलन तथा तालमेल बनाये रखने के लिए कार्य करते हैं.[13] स्टार वॉर्स फिल्म के द्वारा इन सिद्धान्तों को प्रसिद्धि दिलाई गयी है जिसमें प्रकाश और अन्धकार को एक दूसरे के विरोध में कार्य करते हुए दिखाया गया है लेकिन अन्तत: वे शक्ति (फोर्स) में सन्तुलन पैदा करते हैं.

विरोधाभास से भरे हुए इस संसार को हम किस नज़र से देखते हैं; तनाव भरा हुआ एक संसार जो हमारे अन्दर और हमारे चारों ओर पाया जाता है? यदि हम मार्गदर्शन के लिए केवल अपनी भावनाओं (ज्ञानेन्द्रियों) के ऊपर निर्भर रहें तो इस समझ को समर्थन करने वाले साक्ष्य काफी मात्रा में दिखाई देते हैं. स्टार वॉर्स फिल्म के शुरूआती शब्द यदि हम उधार लें तो हम कह सकते हैं, ''सदियों पहले बहुत सुदूर एक आकाशगंगा (गैलेक्सी) में.'' यदि हम एक बार फिर से प्राचीनकाल के नबियों की ओर मुड़ें, तो इस विरोधी तंत्र की उत्पत्ति को खोज सकते हैं.

[12] https://en.wikipedia.org/wiki/Dialectic
[13] https://en.wikipedia.org/wiki/Yin_and_yang

''हे भोर के चमकनेवाले तारे, तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? तू मन में कहता तो था, ''मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा. मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा. मैं मेघों से भी ऊँचे ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा.'' यशायाह 14:12-14

लूसीफर को एक सुन्दर स्वर्गदूत के रूप में बनाया गया था और यह सभी स्वर्गदूतों में प्रथम था. वह जिस विश्व में पैदा हुआ था वह जीवन के स्रोत έκ→δια= ζωη स्रोत→माध्यम=जीवन के सिद्धान्त पर कार्य करता है. वहाँ पूरी तरह से शान्ति और तालमेल था क्योंकि बनाये गये सभी प्राणी सभी आशीषों के महान स्रोत-पुत्र के माध्यम से पहुँचते थे. पिता और पुत्र के मध्य में पाया जानेवाला मधुर तालमेल विश्व के सभी प्राणियों के बीच में भी तब तक पाया जाता था जब तक उनकी व्यक्तिगत पहचान की आधारशिला परमेश्वर के पुत्र पर आधारित थी. सभी वस्तुओं का केवल एक मात्र स्रोत हो सकता है, और वह है पिता. संसार में शान्ति निरन्तर इस सत्य को स्वीकार करने पर ही निर्भर थी.''यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है.'' व्यवस्थाविवरण 6:4.

लूसीफर यह विश्वास करने लगा कि जो कुछ उसके पास था वह स्वर्गीय अधिकार के द्वारा उसका अपनाहो गया था और यह कि वह अपना परमेश्वर स्वंय ही था. इस झूठ के कारण ही वह ऐसे व्यवहार करने लगा जैसे कि वह परम पवित्र-पिता के समान था. लूसीफर ने पिता को दूर करने की कोशिश तो नहीं की लेकिन अपने आपको परमेश्वर के बराबर समझने लगा. वह पिता तक उसके पुत्र के माध्यम से नहीं पहुँचना चाहता था. उसने विश्व के लिए पूरी तरह से एक समानान्तर सरकार (मॉडल) की कल्पना की जहाँ पर सभी प्राणी स्वयं अपने आपको ही अपने जीवन के स्रोत के रूप में देख सकें. इस प्रकार से लूसीफर ने विश्व के ऊपर इस तरह से शासन करने की कल्पना की:

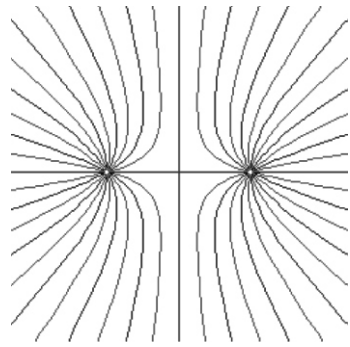

έκ→और έκ
(स्रोत)और(स्रोत)

यह सूत्र जिसे उसने पेश किया था इसने έκ→ δια=ζωη स्रोत-माध्यम-जीवन के सम्बन्ध को समाप्त कर दिया. दो स्वतंत्र έκ→स्रोतों की शक्तियाँ होने से प्राकृतिक रूप से तनाव पैदा हो

जाएगा जिसे सन्तुलित करने के लिए पुन: तालमेल बनाने की ज़रूरत होगी.

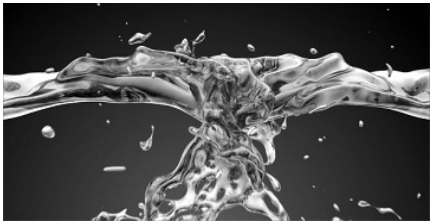

एक सूत्र के रूप में हम यह कह सकते हैं:

ἐκ→ζωη←ἐκ
(स्रोत) ↓ (स्रोत)
ἐκ (स्रोत)

जब दो स्रोत ἐκ→शक्तियाँ आपस में टकराएंगी तब दो शक्तियों के मिलने से एक रहस्यात्मक शक्ति पैदा हो जाएगी. व्यक्तिगत सोच या समझौते के द्वारा उनकी व्यक्तिगत पहचान मिटा दी जाती है, और दोनों के बीच में एक सन्तुलन या शान्ति की स्थापना हो जाती है. यह नया फार्मूला δια माध्यम के सिद्धान्त को समाप्त करने के लिये बनाया गया है. इस प्रकार विश्व में शान्ति बनाये रखने के लिए निरन्तर संघर्ष होने और बार बार समाधान खोजने की स्थिति बनी रहती है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति/शक्ति अपनी पहचान को एक ἐκ→स्रोत के रूप में कायम रखना चाहता है. लूसीफर ने अपने सभी सुननेवालों से वायदा किया है:

> वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर प**रमेश्वर के तुल्य हो जाओगे.**उत्पत्ति 3:5

इस प्रकार हम देखते हैं कि आरम्भ से लूसीफर की एक ही योजना थी कि वह उस महान δια माध्यम- परमेश्वर के पुत्र को योजना से बाहर करना चाहता था.[14] पुत्र को बाहर करने के द्वारा वह प्रत्येक व्यक्ति को यह आज़ादी देना चाहता था कि वह अपनी इच्छा के अनुसार अपने लिए सर्वव्यापी स्रोत का चुनाव कर सकता था. चाहे वह सर्वेश्वरवाद[15] हो या फिर परमेश्वर के बराबर होने वाले देवता की आराधना करने और इसके बराबर होने की बात हो, तब तक इससे कोई फर्क नहीं पड़ता जब तक वास्तव में इसमें δια माध्यम का सिद्धान्त नहीं पाया जाता है. कोई भी तभी तक δια माध्यम सिद्धान्त को सही रीति से दिखाने का दावा कर सकता है जब तक सबसे महत्वपूर्ण वास्तविकता ἐκ→स्रोत की है.

वचन के अनुसार स्वर्गीय नमूना	इस संसार के ईश्वर का नमूना
ἐκ→ δια= ζωη स्रोत→माध्यम=जीवन	1. ἐκ→ζωη←ἐκ (स्रोत) ↓ (स्रोत) 2. ἐκ (स्रोत)

[14]John 8:44 ... He was a murderer from the beginning...

[15] Pantheism is any religious belief or philosophical doctrine that identifies God with the universe or that God is the universe.

विश्व के महान युद्ध की उत्पत्ति यहीं से हुई है. यह युद्ध दो स्वर्गीय शक्तियों के बीच में पाये जाने वाले सम्बन्ध के विषय में दो अलग अलग सोच के बीच में चल रहा है.

इस संसार के ईश्वर का नमूना हमारी जाति के पूर्वजों को उस समय प्राप्त हुआ जब उन्होंने इस झूठ, ''तुम निश्चय न मरोगे...परन्तु तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे'' उत्पत्ति3:4,5; को स्वीकार लिया था. यह तब हुआ जब हमने δια माध्यम जिसके साथ तालमेल बना हुआ था उसे बाहर करके परमेश्वर और मानव के बीच में निरंतर संघर्ष की राह का चुनाव करते हुए यह मान लिया कि हमारे जीवन का ἐκ→ स्रोत हमारे अन्दर ही है. जब वह महान δια माध्यम इस संसार में आया तो हमारी पीढ़ी ने उसके साथ किस प्रकार से व्यवहार किया, यह इस बात का प्रमाण है कि यह झूठ प्राकृतिक रूप से मानवता के बीच में समाहित हो चुका है. उसे क्रूस पर लटका कर मार डाला गया. परमेश्वर के पुत्र का विनम्र और कोमल चरित्र, जो प्रत्येक बात में पिता का आज्ञाकारी था, उसका हमारे उस चरित्र से मेल नहीं खाता था जो हमने अपने आदि माता-पिता से प्राप्त किया था. हमारे आदि माता-पिता को यह ईशन्दिक नमूना सबसे पहले लूसीफर से प्राप्त हुआ था.

यह देखना रुचिकर है कि ''यह तर्क विद्या'' इफिसुस (535-475 ईसा पूर्व) के हैराक्लीटस के दर्शन में पायी जाती थी, जिसने प्रस्ताव रखा था कि संघर्ष और विरोध के कारण सब कुछ निरन्तर बदलता रहता है.[16] पवित्रशास्त्र परमेश्वर के विषय में शैतान के झूठे विचार जो δια-माध्यम की पहचान को समाप्त करना चाहता है, उसे प्रगट करने के द्वारा इस आन्तरिक संघर्ष के स्रोत को बेनक़ाब करता है. इसीलिए कुरिन्थियों को पौलुस प्रेरित इस प्रकार से लिखता है:

> परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नष्ट होनेवालों ही के लिए पड़ा है. और उन अविश्वासियों के लिए, जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके. 2 कुरिन्थियों 4:3,4

जब हमारे मन की आँखों को इस संसार के ईश्वर ने अंधा कर दिया है उस दशा में स्वर्गीय नमूने को समझना हमारे लिए पूरी तरह से असम्भव है. दूसरे शब्दों में, हमें अपने झूठे विचारों के लिए पश्चाताप करना होगा. इस प्रक्रिया को बाईबल में मृत्यु कहा गया है, क्योंकि जब इसे इस संसार के ईश्वर के चश्मे से देखा जाये तो यह पूरे समर्पण की माँग करती है और जो कुछ हमें उचित लगता है उसका पूरी तरह से तिरस्कार करने की माँग करती है. माध्यम के सिद्धान्त की ओर लौटने का एक मात्र मार्ग यह है कि हम परमेश्वर के पुत्र से कहें कि वह हमें सिखाये और हमारी मदद करे. हम अपने आप ऐसा नहीं कर सकते हैं क्योंकि हमारे मन लूसीफर की शिक्षा से प्रभावित होने के कारण इससे ठीक विपरीत दिशा में हैं.

परिचय के रूप में, ''इस संसार के ईश्वर के नमूने'' के द्वारा बहुत सी समस्याएं पैदा की जाती हैं, आइए

---

https://en.wikipedia.org/wiki/Dialectic#Principles

हम सत्य की सही समझ के ऊपर सोच विचार करें. स्वर्गीय नमूने में ''सब वस्तुएं'' उसी एक ɛK→स्रोत से आरम्भ होती हैं जिसका अर्थ है कि इस ब्राह्माण्ड में केवल एक ही पूर्ण सत्य और सत्य का स्रोत पाया जाता है.

''इस संसार के ईश्वर के नमूने'' की पहली सीड़ी या सृष्टि-नमूने में सत्य के स्रोत के कम से कम दो स्रोत पाये जाते हैं. यदि हम सभी लोगों को परमेश्वर या ɛK→स्रोत के स्तर पर उठाने का प्रयास करते हैं तो आपके सामने सत्य के अनेक रूप खड़े हो जाते हैं और यह बात तार्किक रूप से हमें डेनमार्क के विचारक सोरेन कीइयरकेगार्ड (1813-1855) की कहावत पर लेकर जाती है जिसके अनुसार, ''आत्मनिष्ठता ही सत्य है और सत्य ही आत्मनिष्ठता है.'' सत्य को इसकी वस्तुनिष्ठता से तोड़ा गया है, और इससे जो कुछ लोगों के पास उपलब्ध है उसी के द्वारा वे दूसरों को अपने ''सत्य'' के द्वारा समझाने लगते हैं अर्थात् प्रत्येक के लिए सत्य की परिभाषा अलग अलग हो जाती है.

जो औज़ार अपने ही ''सत्य'' को स्थापित करने के लिए प्रयोग किये जाते हैं उनमें शामिल हैं तोड़ मरोड़ करना, धोखा देना और अन्ततः शारीरिक बल का प्रयोग करना, क्योंकि ''इस संसार के ईश्वर के नमूने'' में पूर्ण सत्य की परिभाषा देने के लिए कोई भी एक नमूना नहीं है. इतिहास गवाह है कि इस विधि में दबंग खिलाड़ी वे रहे हैं जो अलग अलग समूहों के लोगों के लिए अलग अलग ''सत्य'' दिखाने में सक्षम रहे हैं चाहे वे ''सत्य'' आपस में एक दूसरे से पूरी तरह से विपरीत विचारों पर ही क्यों न आधारित क्यों न हों. आपस में टकराने वाले अनेक ''सत्य'' व्यक्त करने से तुरन्त ही व्यक्ति की व्यक्तिगत पहचान समाप्त हो जाती है, और फिर हमारे सामने मनगढंत कहानी सुनाने वाले लोग खड़े हो जाते हैं, जो जन मानस को तसल्ली देने के लिए सत्य के ऊपर ऐसी लीपापोती करते हुए हमें यह समझाने की कोशिश करते हैं कि बहुत से लीडर्स केवल इसलिए खड़े हैं कि वे अपने प्रभुत्व को आगे बढ़ाने के लिए कार्य कर सकें. वे लोग जो अधिकाँश लोगों को अपना ''सत्य'' समझाने में सफल हो जाते हैं, चाहे वे कितने ही विरोधाभासी क्यों न हों, वे अपने ''सत्य'' के द्वारा उस समूह के लोगों के ऊपर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए उस समूह के वोट (मत) हासिल करने में सफल हो जाते हैं. दुनिया के सभी देशों की राजनीतिक

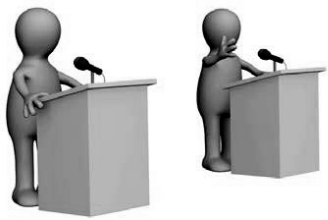

प्रक्रिया इसी तरह से सत्य को तोड़ मरोड़कर पेश करने के द्वारा पोषित होती है जिससे प्रत्येक देश के लोग अपने आपको ठगा हुआ और हतोत्साहित पाते हैं. ये भावनाएं अनन्तः क्रान्ति लाने और शक्ति का केन्द्र बदलने का कारण बन जाती हैं. जब नेतृत्व बदलता है तो समस्याएं पुनः प्रगट हो जाती हैं क्योंकि इसे उसी विचाराधारा पर खड़ा किया गया है.

४.जीवन के लिये विश्राम (सब्बत):मानसिक विश्राम की प्राप्ति

बाईबल मनुष्य की सृष्टि के विषय में निम्नलिखित बातें प्रगट करती है:

> तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथुनों में जीवन का श्वाँस फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया. उत्पत्ति 2:7

इस प्रकार हम सीखते हैं कि मनुष्य भूमि की मिट्टी और जीवन के श्वाँस (वायु/आत्मा) दो वस्तुओं के आपस में मिलने से बना है. इसलिये इन दो तत्वों– आत्मा और शरीर अथवा शरीर और मन के बीच में क्यास म्बन्धह˜ ?य दिअ ाइ न्टरनेटप र,' 'माइन्ड बॉडी प्रॉब्लम'' सर्च करें, आप पायेंगे कि इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए काफी मात्रा में साहित्य उपलब्ध है.

मन/शरीर की समस्या से सम्बंधित मनोविज्ञान (और दर्शनशास्त्र) में सबसे प्रमुख प्रश्न: क्या मन शरीर का ही एक भाग है अथवा शरीर मन का एक भाग है? यदि वे दोनों अलग अलग हैं तो फिर वे एक दूसरे को किस प्रकार से प्रभावित करते हैं? और इन दोनों में से किस के पास दूसरे को नियंत्रित करने का अधिकार होता है?[17]

आइए इन प्रश्नों को हम उन नमूनों के आधार पर परखें जिनके विषय में हम सीख चुके हैं.

पवित्रशास्त्र का स्वर्गीय नमूना	इस संसार के ईश्वर का नमूना
έκ→ δια= ζωη स्रोत→माध्यम=जीवन	1.έκ→ δια= ζωη (स्रोत) ↓ (स्रोत) 2. έκ (स्रोत)

जब हम अदृश्य और दृश्य गुणों को लागू करते हैं तो स्वर्गीय नमूने के तत्वों को पहचानना आसान हो जाता है. स्पष्ट है कि मन अदृश्य है और शरीर दृश्य है. इसलिये इस विषय में हमारा फार्मूला होगा:

मन→शरीर =जीवन

यदि हम इस नमूने के गुणों को लागू करें तो हम देखेंगे कि मन ही है जो शरीर के ऊपर शासन करता है या नियंत्रण करता है. देह या शरीर वह माध्यम है जिसके द्वारा मन के विचार प्रगट होते हैं. मन के विचार शरीर की आवाज़ और कार्यों के द्वारा प्रगट होते हैं. जब पौलुस ने यह कहा तो उसने मन और शरीर के सम्बन्ध को प्रगट किया:

[17]http://www.simplypsychology.org/mindbodydebate.html

परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ. 1 कुरिन्थियों 9:27

देह या शरीर को मन की अधीनता में रखा गया है. फिर भी इस बिन्दु पर स्वर्गीय नमूने के गुणों को लागू करते समय हमें सावधान रहने की ज़रूरत है. मन शरीर का रक्षक है क्योंकि मन की चाहत रहती है कि अच्छा खाये, व्यायाम करे और शरीर को पर्याप्त विश्राम मिले. यह प्लैटो के उन विचारों के विपरीत है जिसके कारण शरीर को दबाने और पीड़ित करने तथा साधुओं के समान जीवन बिताने की पद्धति[18] का जन्म हुआ है. यह विचार प्राणी–नमूने के फलों में से एक है जिसके बारे में हम अब अध्ययन करेंगे. इस मॉडल में हम देखते हैं:

1. मन→जीवन ←शरीर (द्वैतवात)
   अथवा
2. मन/शरीर (अद्वैतवाद, एकात्मवाद)

जब मन और शरीर को दो अलग अलग स्वतंत्र स्रोतों के रूप में देखा जाता है, तब इन विरोधी शक्तियों में तालमेल बैठाने का प्रयास किया जाता है. इस नमूने का पालन करने के द्वारा एक आम समस्या यह पैदा होती है कि भूख के प्रश्न को किस प्रकार से लिया जाए. जब शरीर भूख का संकेत देता है और शरीर के बराबर अधिकार रखने वाला मन भी है, तो इन दोनों में से कौन सी शक्ति यह फैसला करेगी कि क्या और कितना खाया जाए? दूसरे शब्दों में शरीर जब भूख का संकेत देता है तो यह एक निवेदन होता है या फिर आदेश? स्वर्गीय नमूने में इसे शरीर द्वारा मन से एक निवेदन के रूप में देखा जाता है. मन शरीर के निवेदन का आँकलन करता है कि यह निवेदन शरीर के लिए हानिकारक होगा या फिर लाभदायक होगा, फिर इसके विषय में आज्ञा देता है. यदि शरीर के कार्य मन के अधीन हैं, तब यदि मन 'न' कहता है तब इन दोनों में कोई संघर्ष नहीं होगा, परन्तु यदि शरीर, और विशेषकर जब दिमाग़ का निचला वाला भाग, दिमाग़ के सामने वाले भाग के अधीन नहीं है, तब दिमाग़ में इस बात पर युद्ध छिड़ जाएगा कि खाना चाहिए या नहीं खाना चाहिए. पूरी दुनिया में यह युद्ध एक बड़े स्तर पर चल रहा है और मोटापे और जीवन पद्धति से सम्बंधित बीमारियों के रूप में इसके परिणाम दिखाई दे रहे हैं क्योंकि मन के स्तर को नीचा करके शरीर की अधीनता में लाकर खड़ा कर दिया गया है.

स्वर्गीय नमूने के भीतर, मन और शरीर के बीच में तालमेल बनाये रखने के लिए मन शरीर के ऊपर नियंत्रण रखता है, जिसमें मन, शरीर की देखभाल और सुरक्षा करता है, और शरीर, मन का पोषण करता है और उसकी इच्छा का पालन करता और उसके विचारों को व्यक्त करता है. जब तक मन और शरीर

[18]Monasticism is a religious way of life in which one renounces worldly pursuits to devote oneself fully to spiritual work. Monastic practices often involve rigid discipline through bodily suffering to weaken and suppress fleshly desires.
[19]https://en.wikipedia.org/wiki/Mind-body_problem

दोनों ही महान ἐκ→δια स्रोत-माध्यम फार्मूले पर कार्य करते रहते हैं, इस प्रकार से युद्ध होने से बच जाता है और जीवन में शान्ति बनी रहती है. यह परमेश्वर के पुत्र, विश्व के महान δια माध्यम की खूबी है, जो हमारे प्राण और शरीर के लिए विश्राम सुनिश्चित करता है:

हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा. मत्ती 11:28

मन और शरीर के बीच में उस समय तालमेल बनना आरम्भ हो जाता है, जब हम मसीह के δια माध्यम सिद्धान्त को अपने जीवन में कार्य करने देते हैं. इस तालमेल का परिणाम हमारे प्राण के लिए विश्राम (सब्बत) के रूप में प्राप्त होता है.

मन और शरीर के मुद्दे का विस्तार करके तर्क (Reason) और भावनाओं के रिश्ते को भी शामिल किया जा सकता है. आइये इन दोनों सूत्रों को एक बार फिर से लागू करें. स्वर्गीय नमूने में हमें यह संकेत मिलता है कि तर्क (Reason) अदृश्य है और भावनाएं दृश्य रूप से प्रगट होती हैं.

तर्क (Reason)→भावनाएं=जीवन

जीव-नमूना ''अपने ईश्वर स्वयं बनो'' में यह उल्टा हो जाता है:

1.तर्क →जीवन ←भावनाएं

↓

2. तर्क का प्रभुत्व ''बुद्धिवाद''[20]

अथवा

2. भावनाओं का प्रभुत्व ''अपनी भावनाओं के अनुसार चलो.''

यदि आप तर्क और भावनाओं के ऊपर अध्ययन करें, इन दोनों के बीच में तालमेल बैठाने के सम्बन्ध में आपको काफी सामग्री मिल जाएगी. तर्क और भावनाओं को दो परस्पर विरोधी शक्तियों के रूप में स्वीकार करने से, इन दोनों के बीच में प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए एक संघर्ष शुरू हो जाता है. प्लैटो ने इसे हमारे जीवन के एक ऐसे रथ के रूप में पेश किया है जिसे सफेद घोड़ा और काला घोड़ा खींच रहे हैं. प्लैटो के लिये तर्क सफेद घोड़ा है और भावना काला घोड़ा है, इस प्रकार से दो परस्पर विरोधी शक्तियों का परिचय मिलता है.

पूरब में ईन और यंग सिद्धान्त में काला और सफेद के बीच पाया जानेवाला विरोध एक क़दम आगे बढ़ गया है जिसमें सफेद का दिल काला है और काले का दिल सफेद है. एक बार फिर से हम इसका प्रदर्शन

[20] https://en.wikipedia.org/wiki/Chariot_Allegory

स्टार वॉर्स मूवी में देख सकते हैं जहाँ जेडी के हृदय का विचार शान्ति के द्वारा प्रकट किया गया, जिसमें इंसानी भावनाएं अनुशासन के द्वारा नियंत्रण की जाती है.

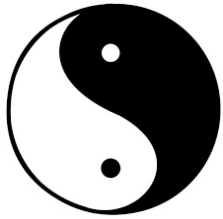

कोई कह सकता है कि भावनाओं का हृदय तर्क है, किन्तु तब यह तर्कविद्या के घेरे को पूरी तरह से बन्द कर देता है और हमें एक रहस्यमय और समझ से परे स्थिति में पहुँचा देता है. ''बुद्धिमान'' लोग आपको बताते हैं कि प्रश्न करने के द्वारा आप अपनी अज्ञानता का परिचय देते हैं; आपके हृदय को वह बात चुपचाप स्वीकार कर लेनी चाहिए जिसे आपका मन समझ नहीं सकता है. ''यह तो एक रहस्य है; बस इसे स्वीकार कर लीजिये.''

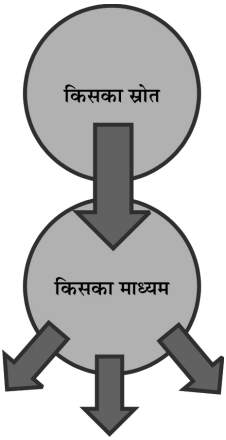

स्वर्गीय नमूने, तर्क और भावनाओं के सम्बन्ध में मुखिया–अधीनता के सिद्धान्त को स्वीकार करने के द्वारा इस सब भ्रम, संघर्ष और युद्ध को शान्त किया जा सकता है क्योंकि वहाँ पर भावनाएं मन की महिमा और चमक को प्रकट करती हैं. हमारे मन और शरीर के बीच में सच्चा तालमेल बनाकर हमें विश्राम देने के लिए परमेश्वर का एकलौता पुत्र (महान δια) हमें जीवन की वह रोटी खाने के लिए आमंत्रित करता है.

१. स्वर्गीय नमूना प्राप्त करने का संकरा मार्ग

क्या आपने किसी को बेस जंपिंग के खेल में किसी ऊँची इमारत से छलाँग लगाते हुए देखा है? बेस जंपिंग एक ख़तरनाक खेल है जिसमें आप पैराशूट हवा में फेंक कर एक बहुत ही ऊँची और ख़तरनाक जगह से नीचे कूदते हैं और फिर ज़मीन छूने से पहले आपको अपना पैराशूट पहनना और खोलना पड़ता है. इस अनुभव को कैमरे में क़ैद करने वाले अनेक वीडियोज़ मैंने देखे हैं. कूदने वाले लोग बताते हैं कि कूदने से पहले अपने डर पर जय प्राप्त करनी पड़ती है.''इस संसार के ईश्वर'' को छोड़कर स्वर्गीय नमूने को स्वीकार करना ठीक इसी के समान है. यदि आप परमेश्वर के पवित्र पर्वत के संदर्भ में स्वर्गीय नमूने को देखें, जहाँ पर पिता पर्वत के सबसे ऊँचे स्थान पर रहता है, हम निम्न स्थिति को देखते हैं:

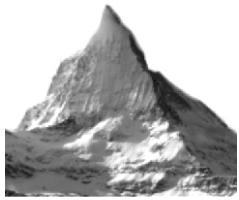

ἐK स्रोत

↓

δια माध्यम

बाईबल हमें पिता के बारे में इस प्रकार से बताती है:

> क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है,''मैं ऊँचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूँ....'' यशायाह 57:15

पिता ऊँचे पर्वत की चोटी पर निवास करता है, और उसके पास तक पहुँचने का मार्ग केवल उसके δια पुत्र के द्वारा ही मिलता है. पुत्र को वह सब कुछ प्राप्त है जो पिता के पास था, किन्तु वह स्वंय अपने पिता के अधीन रहता है. लूसीफर, जो पतन के बाद शैतान बन गया, उसने इच्छा की कि वह अपने सिंहासन को परम प्रधान के बराबर ऊँचा करे.

> तू मन में कहता तो था, 'मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा, मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा, मैं मेघों से भी ऊँचे ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा.' यशायाह 14:13-14.

अपने आपको ऊँचा उठाने वाली यह प्रक्रिया इस तरह से दिखाई देगी:

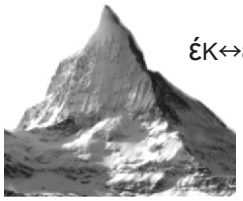

परमेश्वर के तुल्य होने की चाहत रखना और परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर परमेश्वर होने का दावा करना एक बहुत ऊँचा स्थान पाने की चाहत रखना है. यह स्थान हमारे लिये नहीं है इसलिये यह हमें बहुत ऊँची चोटी पर खड़ा देता है. विश्व के महान ἐκ→स्रोत की अधीनता की सच्ची दशा में लौटने के लिए हमें इस ऊँची चोटी से कूदने की आवश्यकता होगी. यदि हम अकेले यहाँ से कूदेंगे तो हम मर जाएंगे और सदैव के लिए नाश हो जाएंगे. विश्व में केवल एक व्यक्ति था जो यहाँ से कूदकर हमारे लिये पुन: स्वर्गीय नमूने पर वापस लौटने में सहायता कर सकता है. परमेश्वर के पुत्र को पिता के तुल्य होने का अधिकार प्राप्त था, उसे पर्वत पर पिता के बराबर में खड़े होने का अधिकार प्राप्त है. किन्तु हम पापी मानव जाति के लिए करुणा के कारण, उसने वह बड़ी छलाँग लगाई है जिससे वह पिता के साथ हमारे सम्बन्धों को फिर से बहाल कर सके.

> जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा. वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया. और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ क्रूस की मृत्यु सह ली. फिलिप्पियों 2:5-8

पर्वत से ऊँची छलाँग लगाने के लिए, परमेश्वर के पुत्र ने स्वर्गीय नमूने की ओर वापस लौटने के वास्ते हमारे लिये एक राह खोल दी है कि एक बार फिर हम परमेश्वर के δια पुत्र के सिद्धान्त को सीख सकें. हमारे सामने चुनौती यह है कि हमारे पास पैराशूट नहीं है, छलाँग लगाने से हमारी मृत्यु निश्चित है. जब हम ऊँची चोटी से छलाँग लगाते हैं तो हमें यह दिखाई नहीं देता है कि नीचे खड़ा हुआ यीशु मसीह ऊपर से नीचे आते समय हमें अपने हाथों में थामने में सक्षम है और एक बार हम सब के लिए मृत्यु का स्वाद चखने के द्वारा उसने ऊपर से नीचे गिरने का हमारा पूरा भार सदैव के लिए स्वंय सह लिया है.

फिर भी ऊपर से नीचे छलाँग लगाने की इच्छा उनके सामने आती है जो परमेश्वर के समान इतने ऊँचे स्थान को प्राप्त करने का ईश्वर निन्दा करने वाला कार्य करते हैं. हमारी प्राकृतिक अवस्था में हमें इस दशा में कोई समस्या दिखाई नहीं देती है क्योंकि इस संसार के ईश्वर ने इस भयानक पाप के प्रति हमारी आँखें अन्धी कर दी हैं. पर्वत के ऊपर से परमेश्वर की व्यवस्था ऊँची आवाज़ में बोलती है. जब हम बिजली

की चमक देखते हैं, गर्जन का शब्द सुनते हैं और पर्वत को काँपता हुआ देखते हैं, हम अपनी दशा को समझते हुए काँपने लगते हैं. हमें छलाँग लगाने की ज़रूरत महसूस होती है, किन्तु हम डरते हैं और हम ख़तरनाक दशा में जड़ बनकर पर्वत पर ही रुके रहते हैं. सत्य यह है कि केवल एक वजह जिसके कारण हम अभी भी जीवित हैं, और वह वज़ह है कि क्रूस पर लटके हुए पुत्र ने यह प्रार्थना की थी, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या करते हैं.''

पर्वत पर चढ़ना अर्थात् अपने आपको ऊँचा उठाना तुरन्त ही मृत्यु का कारण बन सकता है. फिर भी, मसीह हमारे लिये मध्यस्ता की प्रार्थना करता है कि इस महापाप को पहचाने के लिए हमें थोड़ा समय और दे कि हम पश्चाताप कर सकें. जब हम देखते हैं तभी परमेश्वर की व्यवस्था के द्वारा हमारे पापों को हमारे ऊपर प्रगट किया जा सकता है कि हम दौड़कर उसकी बाहों में समा जाएं और अपने आपको उसके साथ क्रूसित होने की अनुमति दें तथा δια माध्यम के जीवन के द्वारा नया जन्म प्राप्त कर सकें. हम अपने आपको हमारे आदि माता-पिता के समान बड़ी अधीनता के साथ पर्वत के नीचे खड़ा हुआ परमेश्वर के पुत्र की धार्मिकता के वस्त्र पहनकर ऊपर बुलाये जाने की प्रतीक्षा में पाते हैं.

पर्वत से छलाँग लगाने को बाईबल की भाषा में संकरा मार्ग कहा जाता है. यह एक बहुत ही संकरा मार्ग है जहाँ पर हम उद्धारकर्ता की गोद को अनुभव करते हुए उसके साथ छलाँग लगा सकते हैं.

> सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है; और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं. मत्ती 7:13

बहुत से लोगों के लिए संकरा फाटक खोजना और उसमें होकर प्रवेश करना दोनों ही कठिन कार्य हैं. पहले तो इसे प्राप्त करना कठिन है क्योंकि इसमें से होकर प्रवेश करने की हम ज़रूरत ही महसूस नहीं करते हैं. एक बार जब संकरा फाटक मिल जाता है फिर इसमें प्रवेश करने के लिए शर्त यह है कि जो कुछ हमारे पास इस संसार में है उस सब को पीछे छोड़ना ज़रूरी है. हमें उस ऊँट के समान बनना है जो सुई की नोक में से होकर गुजरने के लिए तैयार है. यरूशलेम की दीवार में सुई की नोक नामक एक छोटा सा द्वार था. जब मुख्य द्वार बन्द हो जाता था तब शहर में प्रवेश करने के लिए केवल यही एक मात्र रास्ता प्रयोग किया जाता था. व्यापारी को अपने ऊँट पर से सारा सामान उतारना पड़ता था, और ऊँट को घुटनों के बल झुककर दीवार के इस छेद में से होकर घिसकना पड़ता था. यही कारण है कि एक अमीर आदमी जो अपने आपको बड़ा समझता है और इस दुनिया की दौलत से चिपका रहना चाहता है वह सुई की नोक में से प्रवेश नहीं कर सकता है. (मत्ती 19:24)

जब व्यवस्था प्रेम से चेतावनी देती हुई पर्वत से दहाड़ती है, बेहोश करने वाला झूठ कि हम स्वयं ही अपने ἐκ→ स्रोत हैं, बहुतों को इस ऐसी चेतावनी पर इस तरह से हंसने के लिए प्रेरित करता है जैसे कि

काल्पनिक बातों के द्वारा असुरक्षित लोगों को डराया जा रहा हो.

दूसरे लोग यह सिखाते हैं कि,'' अब व्यवस्था की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह तो क्रूस पर पूरी हो गयी है. यीशु की अपमानित मृत्यु की छलाँग ही पर्याप्त थी; हमें उसके साथ छलाँग लगाने की अब कोई ज़रूरत नहीं है. हमें अपने आपको नम्र और दीन बनाकर हृदय को तोड़नेवाला पश्चाताप करने की कोई ज़रूरत नहीं है. '' ऐसी ही अनेक बातों के द्वारा इस दुनिया के लिये संकरे फाटक को इस तरह से ढककर छिपा दिया गया है कि लोग परमेश्वर के पुत्र की धार्मिकता के वस्त्रों को पहने बिना ही ऊँचे पर्वत के ऊपर ही बने रहते हैं.

परमेश्वर के पुत्र के कलीसिया के साथ विवाह के समय जो लोग इन वस्त्रों के बिना पाये जाएंगे, उन्हें पर्वत की ऊँचाई से अकेले ही कूदना पड़ेगा. बार बार परमेश्वर का पुत्र भटकी हुई भेड़ को खोजने के लिए बाहर गया है, परन्तु उन्होंने सुनना न चाहा. एक चिल्लाहट सुनाई दी, ''हम नहीं चाहते कि यह आदमी हमारे ऊपर शासन करे.'' इसलिये उन्हें बिना किसी मध्यस्त के अकेले ही कूदना पड़ेगा, और यह साबित हो जाएगा कि ऐसा करना आवश्यक नहीं था.

हज़ारों फीट ऊँची चोटी पर खड़े होकर नीचे देखना काफी डरावना लग सकता है. ऐसा लगता है कि हमें मरना ही होगा, लेकिन यीशु ने हमसे कहा है:

> जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिए उसकी रक्षा करता है.
> यूहन्ना 12:25.

क्या आप उस आनन्द और संपन्नता को प्राप्त करना चाहते हैं जो आपको उस समय मिलेगा जब पुन: बहाल करने, तालमेल बनाने और जो कुछ आपके लिये ज़रूरी है उसके साथ सम्बन्ध बनाने वाले स्वर्गीय नमूने में आप प्रवेश करेंगे? परमेश्वर की व्यवस्था को आपकी आत्मा के भीतर दहाड़ने दीजिये. अपनी आँखें खोलकर रखिये और 'आप स्वयं ही अपनी शक्ति के ÉK→ स्रोत हैं,' इस दुष्टता पर विश्वास मत कीजिए. यदि आपको यह समझ में नहीं आ रहा है कि यह आम अनुभव हमारे आदि माता-पिता से किस प्रकार से प्राप्त हुआ है, तो अपनी आँखों के खुलने और टूटे हुए सम्बन्धों और आन्तरिक युद्ध को साफ साफ देखने की समझ प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करें. संकरे फाटक के पास आइये और उन चीज़ों को उतार कर दूर फेंक दीजिये जो आज आपकी पहचान हैं, और उस मसीह की ओर देखिये जो दीनता की वादी में न तो कभी आपको छोड़ेगा और न कभी त्यागेगा. यीशु मसीह आशीषों की राह दिखाता है. मैं

आपको आमंत्रित करता हूँ कि प्रत्येक बिन्दु का ध्यान पूर्वक अध्ययन करें और प्रत्येक बिन्दु को स्वीकार करें.

फिर उसने अपना मुँह खोला और यह कहते हुए उन्हें सिखाने लगा:

मत्ती 5:3-12:

(3) धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है.
(4) धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पायेंगे.
(5) धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे.
(6) धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे.
(7) धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी.
(8) धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे.
(9) धन्य हैं वे, जो मेल करानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे.
(10) धन्य हैं वे,जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है.
(11) धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोल कर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें;
(12) तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है, इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था.

यीशु कहता है:

हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा. मत्ती 11:28

आपको अपना हृदय टटोलने में कई दिन लग सकते हैं. आपको ऐसा भी लग सकता है कि आप मसीह की राह में चल रहे हैं किन्तु आप जानते हैं कि आत्मसंघर्ष के द्वारा आपके चरित्र में आशाओं के अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं. आज का दिन उद्धार का दिन है. मसीह आपके हाथ को थाम कर नीचे वादी में ले जाने के लिए तैयार है. मैं आपको आमंत्रित करता हूँ कि आप यह क़दम उठायें और आप अज्ञानता की नहीं किन्तु विश्वास की छलाँग लगाएँ, परन्तु इस बात की सम्पूर्ण जानकारी की छलाँग लगायें कि आप ग़लत राह पर चल रहे थे. मैं जानता हूँ कि इस फैसले के लिए आपको कभी भी पछतावा नहीं होगा. यीशु आज हमसे कहता है:

जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आयेगा उसे मैं कभी न निकालूँगा. यूहन्ना 6:37

10. अगला क़दम

इस छोटी सी पुस्तिक में स्वर्गीय नमूने के बारे में कुछ आधारभूत सिद्धान्तों को पेश किया गया है. इस विषय में खोज का अब एक बहुत बड़ा संसार आपकी प्रतीक्षा कर रहा है कि किस प्रकार से आप अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पिता और पुत्र के द्वारा सच्चे स्रोत और माध्यम के सिद्धान्त को कार्य करते हुए देखेंगे. स्वर्गीय नमूने की रूपरेखा बताने वाली अनेक पुस्तिकाओं की श्रृखंला में यह पहली पुस्तिका है. हम अपनी यात्रा में प्रेम का स्वर्गीय नमूना, विवाह का स्वर्गीय नमूना, व्यवस्था का स्वर्गीय नमूना, आराधना का स्वर्गीय नमूना और अर्थ व्यवस्था का स्वर्गीय नमूना खोजना चाहते हैं. अब तक यात्रा में बने रहने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, और मेरी प्रार्थना है कि यह पुस्तिका आपके लिए आशीष का कारण बनी है. काश कि पिता के ये शब्द आपसे बातें करें:

> हे मेरे पुत्र यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े, (2) और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचे; (3) और प्रवीणता और समझ के लिए अति यत्न से पुकारे, (4) और उसको चाँदी के समान ढूँढे, और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगा रहे, (5) तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा. (6) क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुँह से निकलती हैं. (7) वह सीधे लोगों के लिए खरी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिए वह ढाल ठहरता है. (8)वह न्याय के पथों की देख भाल करता, और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है. नीतिवचन 2:1-8

> तौभी हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिये हैं; और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिसके द्वारा (δια) सब वस्तुएं हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं. 1 कुरिन्थियों 8:6

> यीशु ने उससे कहा, ''मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे (δια) द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता. यूहन्ना 14:6

> तब यीशु ने उनसे फिर कहा, ''मैं तुम से सच सच कहता हूँ, भेड़ों का द्वार मैं हूँ. (8)जितने मुझ से पहले आए वे सब चोर और डाकू हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी. (9) द्वार मैं हूँ; यदि कोई मेरे (δια) द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो उद्धार पायेगा, और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पायेगा.'' यूहन्ना 10:7-9

> ...परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों के लिए ठोकर का कारण और अन्यजातियों के लिए मूर्खता है; (24)परन्तु जो बुलाए हुए हैं, क्या यहूदी, क्या यूनानी, उनके निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है. 1 कुरिन्थियों 1:23-24

> ताकि उनके मनों मे शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहचान लें. (3) जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं. कुलुस्सियों 2:2-3

इस श्रृंखला की दूसरी पुस्तिकाएं...

प्रेम और विवाह के लिए स्वर्गीय नमूना

पवित्र शास्त्र पढ़ने के लिए स्वर्गीय नमूना

आराधना के लिए स्वर्गीय नमूना

इसी लेखक के द्वारा दूसरी पुस्तकें....

मेरे प्रिय

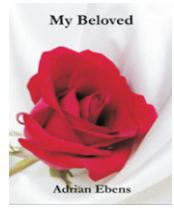

पवित्र स्थान की प्रतिध्वनि, सुलेमान के श्रेष्ठगीत और पिलग्रिम्ज़ प्रोग्रेस के साथ एक आदमी की बाधाओं, परेशानियों और चुनौतियों में से होकर जाने वाली यात्रा को खोजने, सब कुछ बेचने और पिता के पुत्र, यीशु के प्रेम में दीवाना होने की कहानी को पढ़िये.

पहचान के लिए युद्ध

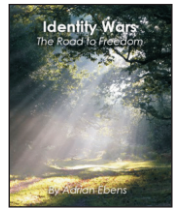

पहचान के लिए युद्ध एक आत्म-खोज की यात्रा है. यह पुस्तक आपको आमंत्रित करती है कि आप अपने महत्व को पूरी तरह से स्वर्गीय सम्बन्धों के संदर्भ में देखें. यह पुस्तक ऐसे सिद्धान्तों को प्रगट करती है जिनके द्वारा आप अपने प्रयासों की मनोदशा से छुटकारा पायेंगे और अपने सबसे महत्वपूर्ण सम्बन्धों में आप आज़ादी प्राप्त करेंगे.

ज़िन्दगी के मामलात

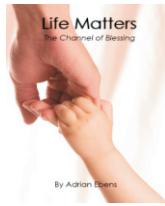

हम अपने जीवन में जो कुछ करते हैं उसके ऊपर इस बात का गहरा प्रभाव पड़ता है कि हमें अपनी अहमियत कहाँ से मिलती है. इस किताब में, आप देखेंगे कि बाईबल के अनुसार हमारी अहमियत कहाँ से मिलती है, और आप यह भी देखेंगे कि हमारी अहमियत को समझने में हमारे पारिवारिक सम्बन्ध किस प्रकार की भूमिका निभाते हैं. मानवीय इतिहास के साथ आप एक ऐसी यात्रा पर भी निकलेंगे जिस पर आप परमेश्वर के पारिवारिक राज्य, जिसमें प्रत्येक सदस्य की अहमियत सुरक्षित रहती है और शैतान के पारिवारिक राज्य में पाये जाने वाले अन्तर को भी देखेंगे. इस किताब के द्वारा जब आप अपने पारिवारिक सम्बन्धों को स्पष्ट रीति से समझते हैं, और परमेश्वर तथा उसके पुत्र के सम्बन्ध की बेहतर समझ हासिल करते हैं, उससे आपको जो ज्ञान मिलेगा, वह निश्चय ही आपके जीवन को बदल देगा.

जीवन के सर्वव्यापी नमूने हमारे चारों ओर पाये जाते हैं.
वे जीवन के प्रत्येक स्तर पर पाये जाते हैं
और पुत्र के माध्यम से पिता से प्राप्त होने वाले
असली स्वर्गीय नमूने से लिये गये हैं.

सूर्य और चन्द्रमा, बीज और पौधा,
माता-पिता और बालक, राजा और देश,
बाईबल का पुराना नियम-नया नियम,
स्रोत और माध्यम को समझने की चाबी है.

एक दबाने वाले विवादित नमूने ने स्त्रियों और पुरुषों,
शासकों और अगुवों के हृदय और मन में राह बना ली है.
सभी को अपने जीवन और मृत्यु का नमूना स्वयं ही चुनना है.
पवित्रशास्त्र जिस नमूने को चुनने के लिए हमें प्रेरित करता
है, उसका नाम है